Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 48 • 5 - 11 सितंबर, 2022 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 03-09-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

**अर्हत उवाच**

जेहिं काले परक्कंतं,
ण पच्छ परितप्पए।

**जो ठीक समय पर पराक्रम करते हैं वे बाद में परिताप नहीं करते।**

# आत्मशुद्धि का सुगम उपाय है जप : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, २६ अगस्त, २०२२**

वर्तमान के वर्धमान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पर्यषण महापर्व की आराधना के अवसर पर फरमाया कि आज का दिन जप दिवस के रूप में प्रतिष्ठित है। जप एक अध्यात्म का प्रयोग है। जप का गलत प्रयोग न हो। वृद्ध साधु-साध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाओं को एक जगह स्थिर रहकर साधना के रूप में जप करें। आत्म शुद्धि का सुगम उपाय है–जप करना। णमो सिद्धाणं का जप करें। वृद्धों के लिए रामबाण-कर्मबाण औषध है। जब तक लाभ मिले शरीर का उपयोग करें। अंत समय में संलेखना-संथारे की ओर आगे बढ़ें। धर्माराधना में आत्मलरन रहें। अखंड जप की ध्वनि भी हमारे कानों में पड़ती रहती है।

प्रभु महावीर की अध्यात्म की यात्रा का विवेचन करते हुए फरमाया कि भगवान महावीर के सत्ताईस भवों में अट्ठारहवाँ भव त्रिपृष्ठ वासुदेव का। त्रिपृष्ठ एक समस्या सिंह का संहार कर एक धाति को प्राप्त किया।

अश्वग्रीव को सूचना मिली कि शेर की समस्या समाप्त हो गई। उसने सोचा कि दोनों लक्षण मिल गए हैं। ज्योतिषी के अनुसार ये त्रिपृष्ठ मेरा काल है। इसका वध मैं करा दूँ। प्रजापति के पास अश्वग्रीव के पास संदेश पहुँचा कि हमारे यहाँ तुम्हारे दोनों पुत्रों का सम्मान करना चाहते हैं। त्रिपृष्ठ को पता चला उसने संदेश का जवाब दिया कि अश्वग्रीव को समाचार मिल जाए कि जो राजा एक शेर की समस्या को समाहित नहीं कर सका, ऐसे कमजोर बुजदिल राजा के हाथ से हम सम्मान नहीं लेना चाहते।

ये बात सुनकर अश्वग्रीव तिलमिला उठा कि ये तो मेरा अपमान है। अश्वग्रीव चतुरंगिनी सेना के साथ युद्ध में आ डटा। इधर त्रिपृष्ठ भी आ डटा। युद्ध चला। लक्ष्य बढ़िया होता है, पर उसके लिए कभी-कभी लड़ाई करनी पड़ सकती है। देश रक्षा के लिए हिंसा भी करना पड़ सकती है। हिंसा-हिंसा के परिणामों में अंतर रह सकता है।

आरंभजा हिंसा तो करनी पड़ सकती है, पर तुच्छ लाभ के लिए संकल्पजा हिंसा नहीं करनी चाहिए। युद्ध में कोई डटकर भाग जाए वो भी अच्छी बात नहीं। धर्मशास्त्र में आत्म युद्ध की बात उठती है। अपनी आत्मा के साथ युद्ध करो, कर्मों को काटो, यह धर्म-युद्ध-आत्मयुद्ध है। त्रिपृष्ठ ने सुदर्शन चक्र के द्वारा अश्वग्रीव को मार डाला और त्रिपृष्ठ वासुदेव बन गया। वासुदेव प्रतिवासुदेव को मारकर सत्ता में आता है।

त्रिपृष्ठ इस अवसर्पिणी काल का प्रथम वासुदेव बना, अंचल बलदेव बना। पोतनपुर में एक बार ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांस कुमार का पदार्पण होता है। दोनों भाइयों ने भगवान का प्रवचन सुना और फिर सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई। राज्याधिकार में आकर जो राजा प्रजा की सेवा न करे तो उसका राज्याधिकार बेकार है। जैसे बकरी के गले का स्तन। लोकतंत्र में भी सरकार प्रजा का ध्यान दे। राजनीति भी एक सेवा कार्य है।

कुछ समय बाद त्रिपृष्ठ का वह सम्यक्त्व रूपी प्रकाश चला गया। एक बार वे रात्रि में संगीत के प्रोग्राम में आनंद ले रहा था। वासुदेव ने सेवक से कहा कि मुझे नींद आने लग जाए तो प्रोग्राम बंद करा देना। वासुदेव को नींद आ गई पर सेवक ने प्रोग्राम बंद नहीं करवाया। त्रिपृष्ठ ने सेवक के कानों में गरम-गरम शीशा डलवा दिया। सेवक तड़प-तड़पकर मर गया। इसी कारण भगवान के भव में उनके कानों में कीलें ठोकी गई।

वहाँ से प्रभु की आत्मा आयुष्य पूर्ण कर सातवें नरक में गई। ३३ सागरोपम का आयुष्य पूर्ण कर बीसवें भव में सिंह की योनि में उत्पन्न हुए। सिंह का आयुष्य पूर्ण कर फिर चौथी नरक में पैदा हुए। वहाँ से निकलकर बावीसवें भव में मनुष्य भव में पैदा होते हैं। रथपुर नगर में राजकुमार विमल के रूप में पैदा होते हैं।

राजकुमार विमल राजा बन जाता है, वह बड़ा करुणावान-सरल स्वभावी राजा था। एक बार जंगल में एक शिकारी ने जाल लगाकर के निरपराध हिरण-हिरणियों को पकड़ रखा था। राजा विमल का हृदय करुणा से भर उठा और शिकारी को समझाकर उन पशुओं को मुक्त कराकर शिकारी को शिकार का त्याग करवाया। अंत में राजा विमल चारित्र ग्रहण कर कल्याण की दिशा में आगे बढ़े, फिर वहाँ का आयुष्य पूर्ण कर तेवीसवें भव में भगवान की आत्मा प्रियमित्र के रूप में चक्रवर्तित्व को प्राप्त हो जाती है। आखिर में मुनि दीक्षा ग्रहण कर लेते हैं। यहाँ का आयुष्य पूर्ण कर वे सातवें देवलोक में उत्पन्न होते हैं। पच्चीसवें भव में वे क्षत्रा नाम की नगरी में महाराजा मिल शत्रु व महाराणी भद्रा की कुक्षी से राजकुमार नंदन के रूप में पैदा होते हैं।

जीत शत्रु अपना राज्य नंदन को सौंपकर दीक्षित हो जाते हैं। राजा नंदन का ८४ लाख वर्ष का आयुष्य है। ८३ लाख वर्ष राजा की सेवा कर दीक्षा ग्रहण करते हैं। राजा से राजर्षि बन गए।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

# अणुव्रत का सार है सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, २८ अगस्त, २०२२**

पर्युषण महापर्व का पाँचवाँ दिन–अणुव्रत चेतना दिवस। गुरुदेव तुलसी का एक महान अवदान–अणुव्रत जो आदमी को नैतिकता की ओर ले जाने वाला है। अणुव्रत यानी छोटे-छोटे नियम। इन नियमों को जैन-जैनेत्तर कोई भी व्यक्ति जीवन में उतारकर नैतिक और आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर हो सकता है।

अणुव्रत दिवस के अवसर पर महामहीम, युगप्रधान आचार्यप्रवर ने फरमाया कि आज अणुव्रत चेतना दिवस है। व्रत के आगे अणु लगा दिया तो अणुव्रत, महा लगा दिया तो महाव्रत और बारह लगा दिया तो बारह व्रत हो जाते हैं। श्रावक के लिए अणुव्रत पालनीय होता है। गृहस्थ बारह व्रतों को स्वीकार कर ले तो जीवन में त्याग आ सकता है। सुमंगल साधना से गृहस्थ जीवन प्रशस्त बन सकता है।

गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन चलाया वो जैन की सीमा से बाहर था। इसे जैन-अजैन कोई भी स्वीकार कर सकता है। कई संस्थाएँ जुड़ी हुई हैं। यह जनकल्याणकारी आंदोलन है। अणुव्रत रूपी आम का रस सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति इन तीन सूत्रों में आ जाता है। अणुव्रती बनने के लिए आस्तिक होना भी जरूरी नहीं है। नास्तिक भी अणुव्रती बन सकता है।

परमपूज्य गुरुदेव ने कितनों को प्रेरणा देकर अणुव्रती बनाया होगा। अणुव्रत हमारे धर्मसंघ का एक कार्य है। अणुव्रत गीत के एक पद्य 'सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से' का सुमधुर संगान पूज्यप्रवर द्वारा किया गया।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
5 - 11 सितंबर, 2022



✦ *शिक्षानीति हो या राजनीति, सब नीतियों में अहिंसा, नैतिकता, मूल्यवत्ता का प्रभाव रहना चाहिए।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# जीवन के कल्याण का माध्यम है सामायिक : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, २६ अगस्त, २०२२**

पर्युषण महापर्व का तीसरा दिन–सामायिक दिवस। समता के सागर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे साधना के जीवन में सम्यक्त्व का बहुत महत्त्व है। बिना सम्यक्त्व आए मुक्ति हो ही नहीं सकती। अभव्य जीव है, नव ग्रैवेयक में जाकर भले पैदा हो जाए पर मुक्ति में उसका उपपात कभी नहीं हो सकता। सम्यक्त्व के बिना आचार क्रिया का पालन कर भी लो, बहुत लाभ नहीं होता है।

परम पूज्य आचार्यश्री जयाचार्य के आराधना ढाल के पद हमें यह संकेत दे रहे हैं कि सम्यक्त्व के बिना अनंत बार आचार क्रिया पाल ली जाए तो मुक्ति प्राप्त नहीं होती।

दुनिया में कोई आदमी आदमी के रूप में स्थायी नहीं रहता है। आयुष्य समाप्त होने पर नयसार की आत्मा पहले देवलोक सौधर्म देवलोक में उत्पन्न हो जाती है। देवगति में भी कोई अमर नहीं है। उनका भी अवसान होता है। नयसार की आत्मा प्रथम देवलोक का आयुष्य पूर्ण कर मनुष्य जन्म को प्राप्त होती है।

मनुष्य जीवन दुर्लभ बताया गया है, पर नयसार का जीव बार-बार मनुष्यत्व को प्राप्त हो रहा है। मनुष्य जन्म कौन से परिवेश में होता है, यह भी एक महत्त्वपूर्ण है। नयसार के जीव को भगवान ऋषभ के अच्छे कुल में जन्म लेने का अवसर मिला। भरत के पुत्र के रूप में मरीचि कुमार का जन्म होता है। मरीचि के जन्म को विस्तार से समझाया।

ग्यारह अंग और बारह उपांग हमें वर्तमान में उपलब्ध है। कुल ३२ आगम हमारे यहाँ मान्य हैं, हमारे साधु-साध्वियाँ, समणियाँ जितना मौका मिले, आगम स्वाध्याय का प्रयास करें। सवेरे के समय कुछ सीखने का प्रयास करें। साधु होता है, उसके लिए स्वाध्याय अच्छा काम है। दूसरा सेवा और तीसरा तपस्या अच्छा काम है। निर्जरा का संतुलन बैठा लेना चाहिए।

साधु है तो साधु के परिषह भी आ सकते हैं। साधु परिषहों को जीतने का प्रयास करें। समता-शांति रहे। मरीचि को ग्रीष्म सहन करना मुश्किल हो रहा है। भीषण प्यास का परिषह हो जाता है। ताप का परिषह सहन नहीं होता है। साधुपन छोड़ने की भावना हो गई है, पर घर नहीं जाता है, साधक बन जाता है। बीच का रास्ता ले लेता है। नया वेष धारण कर लेता है। त्रिदंड, छत्र और गेरुआ वस्त्रधारी बन जाता है। न वह साधु रहा न गृहस्थ, बीच का सा रह गया। स्नान करता, चंदन का लेप करता, खड़ाऊ पहनता। चक्रवर्ती भरत भगवान ऋषभ से प्रश्न करते हैं। भगवान मरीचि के बारे में बताते हैं कि वह वासुदेव, चक्रवर्ती और तीर्थंकर भी बनेगा। ५४ उत्तम पुरुष आगम बताए गए हैं। २४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती व बलदेव और वासुदेव।

भरत बाहर आकर मरीचि को सारी बात बताते हैं। पुरुषार्थ बढ़िया है, तो भविष्य अच्छा हो सकता है। आदमी सम्यक् पुरुषार्थ करे। आदमी को भाग्य भरोसे नहीं बैठना चाहिए। अपने से अपना कल्याण हो सकता है।

आज सामायिक दिवस है। श्रावक-श्राविकाओं को सामायिक करने का प्रयास करना चाहिए। श्रावक प्रतिक्रमण में कहा गया है–धर्म है, समता, विषमता पाप का आधार है। सावद्य क्रिया छोड़ समता की साधना करनी चाहिए। साधु-साध्वियों में श्रुत सामायिक भी चलती है। जो ज्ञानवर्धक सिद्ध हो सकती है। सामायिक समता का सार है। श्रावकों में शनिवार की ७ से ८ सामायिक हो।

आज चतुर्दशी एवं पक्खी भी है। पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन किया। तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि आनंद श्रावक बारह व्रती था। नौवाँ व्रत है सामायिक। सामायिक के तीन प्रकार होते हैं। सावद्य योग का त्याग सामायिक है। समभाव में स्थित होना सामायिक है। सामायिक स्वहित और परहित मोक्ष के लिए करनी चाहिए। सामायिक चौदह पूर्वों का सार है। जिससे व्यक्ति का कल्याण हो सकता है।

मुख्य मुनि महावीर कुमारजी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी एक महान रचनाकार थे। 'माया री खोटी है मार---' गीत का सुमधुर संगान किया।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि मार्दव भाव विभाव से स्वभाव की ओर ले जाती है। कुटिलता का भाव अच्छा नहीं है। हमें मायाचार से बचना चाहिए। माया मित्रता का नाश करने वाली होती है।

मुनि राजकुमार जी, मुनि शुभंकर जी, मुनि ध्रुवकुमार जी एवं मुनि सत्यकुमार जी ने भी प्रेरणादायक बातें समझायीं।

छत्तीसगढ़ हाइकोर्ट के भूतपूर्व जज गौतम चोरड़िया ने भी अपने भाव अभिव्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## अणुव्रत का सार है सद्भावना, नैतिकता और...

**(प्रथम पृष्ठ का शेष)**

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा का विवेचन करते हुए फरमाया कि अट्ठारहवाँ भव नयसार या भगवान महावीर की आत्मा का, उसमें त्रिपृष्ठ के रूप में प्रभु की आत्मा है। प्रतिवासुदेव को मारकर द्रव्य वासुदेव भाव वासुदेव बन जाते हैं।

उस समय अश्वग्रीव नाम का प्रति वासुदेव था, तीन खंडों का आधिपत्य कर रहा था। उसके मन में विकल्प उठा होगा कि मेरी मृत्यु कैसे होगी। मृत्यु आने के अनेक मार्ग हैं। चाहे कितना ही बड़ा आदमी तीर्थंकर या चक्रवर्ती भी क्यों न हो, कभी न कभी मृत्यु तो अवश्य होती है।

अश्वग्रीव ने निमितज्ञ को बुलाकर जानकारी ली। निमितज्ञ बोला कि मैं दो कारण बता देता हूँ, जिसके कारण आपकी मृत्यु होगी। पहला लक्षण है–आपका दूत है चंडवेग उसको जो अपमानित करेगा वो आपका हंता होगा। दूसरी पहचान है कि शालिखेत में आतंक फैला रहे शेर को जो मारेगा वो आपका हंता होगा। अश्वग्रीव ने सोचा कि हमें इस बात पर ध्यान देना है कि मेरे दूत का कौन अपमान करता है, कौन उस शेर को मारता है।

जैसे एक पहिये से रथ नहीं चलता है, वैसे ही राजा के लिए कहा गया है कि तुम साथियों की नियुक्ति कर सचिवालय बनाओ, उनसे काम लेते रहो। तंत्र होने से कार्य सुसंचालित हो सकता है। एक बार राजदूत बडवेग कार्य करते-करते पोतनपुर में गया। राजा सभा लगी थी संगीत का कार्यक्रम चल रहा था। संगीत का अपना महत्त्व होता है।

राजा प्रजापति की संगीत सभा में दूत आया, राजा ने उसका सम्मान किया। उसके आने से संगीत में बाधा आ गई, त्रिपृष्ठ को अखरा उसने दूत को अपमानित कर दिया। दूत ने सारी बात अपने राज्य में पहुँचकर अश्वग्रीव को जानकारी दी। अश्वग्रीव का बात सुनकर माथा ठनका कि निमितज्ञ की एक बात तो मिल गई।

एक बार शालिखेत में शेर का आतंक फेल गया। राजा से किसानों ने निवेदन किया कि हमारी सुरक्षा की व्यवस्था करो। अश्वग्रीव ने अपने अधीनस्थ राजाओं को सुरक्षा का दायित्व सौंपा। इस क्रम में प्रजापति का भी नंबर आया। प्रजापति जाने लगे तो त्रिपृष्ठ ने पिताजी से बात पूछी। त्रिपृष्ठ ने तो निदान किया था कि प्रबल बलशाली बनूँ। त्रिपृष्ठ बोला पिताजी आप विराजो हम देख लेंगे। दोनों भाई तैयार होकर गए।

दोनों भाई आगे बढ़कर शेर की गुफा के आगे पहुँचकर नाद किया। शेर नाद सुनकर बाहर आए। दोनों एक-दूसरे के आगे बढ़े। शेर त्रिपृष्ठ पर झपटा तो त्रिपृष्ठ ने उसके दोनों जबड़ों को बाँस की तरह चीर डाला। शेर मर गया।

अश्वग्रीव को सूचना मिलती है, तो उसने सोचा दूसरा लक्षण भी मिल गया है। अब त्रिपृष्ठ को समाप्त करवाना है, यह योजना बना रहा है। पर नियम यह है कि प्रतिवासुदेव, वासुदेव को नहीं मार सकता। वासुदेव ही प्रतिवासुदेव को मारता है।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि अणुव्रत एक लोकहित करने वाला आंदोलन है। अपने पर अपना अनुशासन अणुव्रत की परिभाषा। अणुव्रत यानी छोटे-छोटे संकल्प। इनको स्वीकार करने वाला व्यक्ति अणुव्रती बन सकता है। हमारा जीवन छोटा नहीं है, पर छोटे-छोटे नियम हमारे जीवन का निर्माण करने वाले होते हैं।

मुख्य मुनिप्रवर ने संयम धर्म पर सुमधुर गीत का संगान किया।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि हमें आत्मा का दर्शन करना है, तो हमें मन को वश में करना होगा। मन को वश में करने के लिए अभ्यास और वैराग्य आवश्यक होता है। मन को एकाग्र करने के लिए प्रेक्षाध्यान में दीर्घ श्वास प्रेक्षा पद्धति बताई गई है।

मुनि मनन कुमार जी, मुनि सत्यकुमार जी, मुनि मृदुकुमार जी, साध्वी अखिलयशा जी और साध्वी मृदुलयशा जी ने भी प्रेरणा प्रदान कराई।

साध्वी सुषमाकुमारी जी ने नवरंगी तप के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

## विशिष्ट तत्त्ववेत्ता आचार्य थे श्रीमद्जयाचार्य : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, २३ अगस्त, २०२२**

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैसे सूर्य निशांत होने पर भरत क्षेत्र को प्रकाशित कर देता है, भारतवर्ष को प्रकाशित कर देता है और बड़ा शोभायमान होता है। हमारे जीवन में सूर्य की रोशनी और सूर्य के ताप का कितना महत्त्व है।

प्राची में सूर्य उदय होता है, उससे कितना प्रकाश हो जाता है। कितना ताप मिलता है। शास्त्रकार ने आचार्य की तुलना कुछ मानो सूर्य से की है। सूर्य वैसे तो बड़ी चीज है आचार्यश्री सामान्यतया प्रकाश प्रदान करने वाले होते हैं। सूर्य शोभायमान होता है। स्वर्ग में इंदु शोभायमान होता है। जैसे देवों के मध्य इंद्र शोभायमान होता है, वैसे ही आचार्य चारित्रात्माओं के बीच और परिषद के बीच शोभायमान होते हैं।

आचार्य में अनेक विशेषताएँ होती हैं। उनमें आचार की विशेषता हो। कई-कई आचार्य तो श्रुत-बुद्धि की दृष्टि से भी बहुत विकसित होते हैं। आचार्य के पास श्रुत संपदा भी अच्छी होती है, तो वे सम्माननीय-श्रद्धेय होते हैं। श्रुत के प्रकाश के साथ शील की सौरभ भी हो। साथ में उनमें बुद्धि हो।

**(शेष पृष्ठ ३ पर)**

विकास महोत्सव पर विशेष

# जन जीवन निर्माता-आचार्यश्री तुलसी

❐ मुनि कमल कुमार ❐

भारत देश वीर और वीरांगनाओं की जन्मभूमि है। इस भूमि पर समय-समय पर अनेक वीरों ने जन्म लेकर देश का गौरव बढ़ाया है। उन गौरवशाली महापुरुषों में एक नाम आचार्यश्री तुलसी का भी है, जिन्होंने मात्र ११ वर्ष की अल्पायु में तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य श्री कालूगणी के करकमलों से दीक्षा लेकर स्व-कल्याण के साथ जन-जन का कल्याण किया। यह केवल स्तुत्य ही नहीं अनुकरणीय है।

मात्र २२ वर्ष की अवस्था में आप विशाल धर्मसंघ के आचार्य बने। यह केवल तेरापंथ और जैन धर्म के लिए ही नहीं सबके लिए आश्चर्यकारी था। परंतु आपने अपने निर्मल और उदात्त चिंतन से केवल तेरापंथ के साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं का ही नहीं जन-जन का कल्याण कैसे हो, इसका चिंतन ही नहीं किया, बल्कि पूरा प्रयास किया, जिसमें आपको पूर्ण सफलता प्राप्त हुई।

साधु-साध्वियों का गहरा अध्ययन आपके कुशल पुरुषार्थ की देन है। आपने आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होते ही प्रथम कार्य यह किया जिससे आज तेरापंथ के साधु-साध्वियों, मंदिर-मस्जिद, गुरुद्वारा आश्रम में ही नहीं, संसद भवन राष्ट्रपति भवन में भी पहुँचकर उन्हें संबोधित करते हैं। सबको युगानुकूल चिंतन प्रदान करते हैं। भारत के प्रथम राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री से लेकर आज तक के समस्त राजनेता भी आपश्री से या आपके उत्तराधिकारियों से उचित मार्गदर्शन प्राप्त करते रहे हैं। आपका चिंतन बड़ा ही व्यापक और अनाग्रही था, आप फरमाते कोई जैन बने या नहीं परंतु गुडमैन बने।

आपने जो नैतिकता का अभियान चलाया व अणुव्रत आंदोलन के नाम से प्रतिष्ठित हुआ। वह आंदोलन विद्यार्थी, अध्यापक, व्यापारी, कर्मचारी, श्रमिक, राजनेता, प्रत्याशी सबके लिए था। उनका व्यापक चिंतन था कि हर व्यक्ति हर वर्ग के लोग नैतिक प्रामाणिक स्वच्छ हों तभी विश्व शांति का सपना साकार हो सकता है। उनके उदात्त विचारों ने ही उन्हें युगप्रधान बनाया। उन्हें धर्मसंघ से युगप्रधान, गणाधिपति अणुव्रत अनुशास्ता जैसे संबोधन अलंकरण प्राप्त हुए। समाज और सरकार के द्वारा भारत ज्योति, वाक्पति, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, हकीम खाँ सूर खाँ सम्मान जैसे प्राप्त हुए हैं। आपके सुश्रम से बाल विवाह, मृत्यु भोज, घुँघट प्रथा जैसी अनेक कुरीतियों का समुचित उपचार हो पाया। आपने अपने रहते ही अपने सक्षम उत्तराधिकारी को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर आचार्य पद का विसर्जन कर नया कीर्तिमान बना दिया जो आज के पद लिप्सी लोगों के लिए बोध पाठ बन गया।

तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य एक ही होते हैं। यह आचार्य भिक्षु की कृपा का फल है। और वर्तमान आचार्य का ही पट्ट महोत्सव मनाया जाता है। जब गुरुदेव तुलसी का पट्ट महोत्सव आया तब गुरुदेव ने उसे मनाने की मनाही कर दी एवं अपनी बात को स्पष्ट करते हुए यह फरमाया कि मैंने आचार्य पद का विसर्जन कर दिया है अब मेरा पट्ट महोत्सव नहीं मनाया जाए। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी वर्तमान आचार्य हैं इनका ही पट्ट महोत्सव मनाया जाए।

उस समय आचार्य महाप्रज्ञ जी ने निवेदन किया कि हम इस दिवस को विकास महोत्सव के रूप में प्रतिवर्ष मनाएँगे, क्योंकि आपने तेरापंथ धर्मसंघ को नए-नए आयाम देकर इसको विश्वविख्यात बना दिया।इस दृष्टि से हम भादवा सुदी नवमी को आपके पट्ट महोत्सव को सदा-सदा ही विकास महोत्सव के रूप में मनाएँगे। तब से अब तक अर्थात् आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के शासनकाल में भी इसे विधिवत मनाया गया। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जी के शासनकाल में भी इसे मनाया जाता है, आगे भी मनाया जाएगा। आचार्यश्री तुलसी एक स्वस्थ कल्पनाकार ही नहीं प्रयोगधर्मा आचार्य थे। समय-समय पर अपनी गहरी साधना से एवं चिंतन की गहराई से प्राप्त तत्त्वों से जो मार्गदर्शन किया उसे युग नहीं शताब्दियों तक सदा-सदा स्मरण किया जाएगा। जीवन के अंतिम साँस तक सक्रिय और सक्षम रहकर सबका मार्गदर्शन करते रहें, ऐसे विकास पुरुष के विकास महोत्सव पर कोटि-कोटि अभिनंदन करते हैं। वंदन करते हैं।

## विशिष्ट तत्त्ववेत्ता आचार्य थे...

**(पृष्ठ दो का शेष)**

आज एक महान आचार्य जयाचार्य का २४२वाँ वार्षिक महाप्रयाण दिवस है। उनका समाधि स्थल जयपुर में है। मैं भी वहाँ गया था। श्रीमद्जयाचार्य हमारे चतुर्थ आचार्य थे। उनका जन्म और आचार्य भिक्षु का महाप्रयाण लगभग आसपास ही था। एक महापुरुष विदा हुआ और दूसरे महापुरुष ने मानो जन्म लिया।

आचार्य भिक्षु का ज्ञान गजब का था तो पूज्य जयाचार्य का ज्ञान भी गजब का था। ज्ञान की दृष्टि से भी वे आचार्य भिक्षु के उत्तराधिकारी थे। जयाचार्य का राजस्थानी भाषा का विशाल ग्रंथ भगवती की जोड़ है। कितने पद्यों और राग-रागिणियों से उसकी रचना की गई है। साथ में उन्होंने अपनी समीक्षा भी की है। वे बहुश्रुत थे। संस्कृत भाषा का भी ज्ञान था।

उनके अपने ग्रंथ हम देखें प्रश्नोत्तर तत्त्व बोध में कितना तत्त्व ज्ञान भरा पड़ा है। झीणी चरचा में भी कितना तत्त्व ज्ञान भरा पड़ा है। उनका ज्ञान प्रवृद्ध था। आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों को हम भ्रम विध्वंसक ग्रंथ से समझ सकते हैं। वे एक विशिष्ट तत्त्ववेत्ता आचार्य थे। उनका अपना साधना का विकास था। छोटी उम्र में साधु बन गए जो आगे चलकर हमारे आचार्य बन गए थे।

अंत समय में तो वे साधना में लग गए थे। जयाचार्य ने भी ध्यान साधना की थी। उनके शील चारित्र को भी हम देखें। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ में नए-नए आयाम उद्घाटित किए थे। आचार्य भिक्षु और जयाचार्य की तुलना कर सकते हैं, तो जयाचार्य और आचार्य तुलसी की भी हम कुछ अंशों में तुलना कर सकते हैं। जैसे आगम कार्य, संघीय दृष्टि से साध्वी प्रमुखाओं की एकाधिक नियुक्ति, संस्कृत भाषा के विकास के रूप में उन्हें देख सकते हैं।

पट्टोत्सव, चरमोत्सव व मर्यादा महोत्सव भी जयाचार्य की देन है। हमें ऐसे आचार्य मिले जिन्होंने संपदा छोड़ी है। हमारा धर्मसंघ जयाचार्य से उपकृत हुआ है। ऐसे परमपूज्य जयाचार्य के प्रति मैं श्रद्धायुक्त वंदना अर्पित करता हूँ। पूज्यप्रवर ने गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित जयाचार्य के प्रति लिखित गीत का सुमधुर संगान किया।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि जयाचार्य ने तेरापंथ के भंडार को भरने का प्रयत्न किया। उनकी बचपन से ही कंठस्थ के प्रति रुचि थी। उन्होंने अनेक आगमों को कंठस्थ किया था। कंठस्थ ज्ञान से उनकी मेधा निखरती गई। उन्होंने अंतिम समय तक उसे कंठस्थ रखा था।

मुख्यमुनि प्रवर ने गीत से उनके प्रति अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त की। साध्वीवर्या जी ने जयाचार्य के बचपन से जीवन प्रसंगों को समझाया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## विकास महोत्सव पर

● मुनि विजय कुमार ●

संघ पुरुष को करें प्रणाम, जन-जन की श्रद्धा का धाम,
भैक्षव शासन, खिलता उपवन, नंदन वन ज्यों है अभिराम।। स्थायीपद।।

प्राण संघ का शुद्ध आचरण, श्रद्धा विनय प्रेम जिसका तन,
श्वास समर्पण, अहं विसर्जन, अनुशासन की सबल लगाम।।१।।

एक सुगुरु का चलता शासन, है मस्तिष्क तुल्य यह आसन,
मिटता दूषण, मिलता पोषण, छायी सुषमा आठों याम।।२।।

दूषित तत्त्व नहीं टिक पाता, संघ स्वस्थ तब ही कहलाता,
बनता त्राता, गण विकसाता, उभरे नित्य नए आयाम।।३।।

जब तक सूरज तपे धरा पर, फैलाए उद्योत सुधाकर,
यह गण तरुवर, बने विकस्वर, अमर रहे तेरापंथ नाम।।४।।

संघ भक्ति रग-रग रम जाए, चिहुं दिशि 'विजय- ध्वजा फहराए,
गण सरसाए, शोभा पाए, करें सदा हम ऐसे काम।।५।।

**लय : जय ज्योतिर्मय ज्योति महान्**

## संवाद विद्यार्थियों के साथ

**दिल्ली।**

संवाद विद्यार्थियों के साथ अणुव्रत समिति दिल्ली ने 'संवाद विद्यार्थियों के साथ' कार्यक्रम का आयोजन किया। नशामुक्ति, अनुशासन तथा स्वच्छता जैसे मुख्य बिंदुओं पर अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी, मंत्री धनपत नाहटा व कार्यसमिति सदस्य पवन गिड़ीया ने बच्चों को शिक्षित किया और 'अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट' की पूरी जानकारी दी, जिसमें सभी विद्यार्थी भाग लेकर अपनी राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले कॉन्टेस्ट में अपनी प्रतिभा दिखा सकते हैं। बच्चों को अणुव्रत गीत का भी अभ्यास कराया गया, सभी ने नशा न करने का संकल्प लिया। गीडिया

खुल के जियो फाउंडेशन एवं अणुव्रत समिति, दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में संचालित आर्थिक दृष्टि से कमजोर लगभग ४० बच्चों को स्कूली शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों व देशभक्ति के बारे में प्रशिक्षण दिया जाता है। यमुना खादर (यमुना नदी के किनारे) स्थित कार्यक्रम के संचालन का दायित्व अणुव्रत समिति दिल्ली के सदस्य किशन व नेहा ने संभाला।

कार्यक्रम में डॉ० आलोक कुमार रस्तोगी, स्नेहाश्री, राजेश गुप्ता और फूलचंद एवं आसपास की झुग्गी-झोंपड़ियों के लोग उपस्थित थे।

## आत्मशुद्धि का सुगम उपाय है...

**(प्रथम पृष्ठ का शेष)**

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि अध्यात्म विद्या का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है—जप या मंत्र चिकित्सा। इसके द्वारा हम मंजिल के निकट पहुँच सकते हैं। इसके द्वारा हम अनेक प्रकार की कठिनाइयों को पार कर सकते हैं। मंत्र या जप से असाध्य कार्य साध्य हो सकते हैं। असाध्य बीमारियाँ साध्य बन सकती हैं। असंभव कार्य भी संभव हो सकता है।

मुख्य महावीर कुमारजी ने कहा कि तप वह है जो हमारी आठ प्रकार की ग्रंथियों को तपाता है। पूर्व गृहीत कर्मों का क्षय करने का आधार तप है। शुभ योग तप है। तपस्या को एक प्रकार का धन कहा गया है। इसका अर्जन मिथ्यात्वी हो या सम्यक्त्वी कोई भी कर सकता है। तपस्या के धन से कर्मों के ऋण को चुका सकते हैं।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने कहा कि सामायिक में प्रवचन सुनने से दो-दो लाभ हो रहे हैं—संवर की साधना और तप की आराधना। 'पर्युषण महापर्व का' गीत के सुमधुर संगान से इस बात को समझाया।

मुनि नम्रकुमार जी, मुनि सत्य कुमार जी, मुनि विवेक कुमार जी, साध्वी समताश्री जी ने प्रेरणादायी भाव अभिव्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
5 - 11 सितंबर, 2022



✦ *आदमी को परिस्थिति सापेक्ष खुशी में ज्यादा लयलीन नहीं होना चाहिए और परिस्थिति सापेक्ष समस्या में ज्यादा दुःखी भी नहीं बनाना चाहिए।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# महिला मंडल के विविध आयोजन

## प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन

**कोटा।**

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य तथा तेममं के तत्त्वावधान में प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि संपूर्ण जिनशासन का महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान है–प्रतिक्रमण। प्रतिक्रमण आत्मा का स्नान है। शरीर पर लगे मेल को दूर करने के लिए शारीरिक स्वच्छता के लिए स्नान की अपनी उपयोगिता है।

साध्वी डॉ० सुधाप्रभाजी ने कहा कि प्रतिक्रमण भीतर के कालुष्य को दूर करने के लिए क्लीनर का काम करता है। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने संचालन किया। साध्वी समत्वयशा जी ने तीर्थंकर स्तुति का संगान किया।

मुख्य अतिथि पदमचंद पटावरी ने कहा कि हम परम सौभाग्यशाली हैं हमने तेरापंथ में जन्म लिया। तेरापंथी श्रावक बने हैं।

मंत्री सुनीता जैन ने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल ने संगान किया। सभा अध्यक्ष संजय बोथरा व मंत्री धर्मचंद जैन ने भाव व्यक्त किए। सभा की ओर से मुख्य अतिथि का सम्मान किया गया।

## पुस्तकालय का लोकार्पण

**उधना।**

अभातेममं के निर्देशन में समृद्ध राष्ट्र योजना के तहत महामंत्री मधु देरासरिया की अध्यक्षता में तेममं ने श्री सरस्वती विद्या मंदिर में पुस्तकालय का लोकार्पण हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत अभातेममं की निवर्तमान अध्यक्षा पुष्पा बैद ने नमस्कार महामंत्र से की।

महिला मंडल अध्यक्षा जसू बाफना ने स्वागत वक्तव्य दिया। सभा मंत्री सुरेश चपलोत ने शुभेच्छा व्यक्त की। स्कूल के अध्यक्ष चंद्रप्रकाश सिंघवी ने कार्य की सराहना की। कार्यक्रम में ट्रस्टी कनक बरमेचा, गुजरात प्रभारी श्रेया बाफना सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्य जन उपस्थित रहे।

आभार ज्ञापन ललिता चोरड़िया व कार्यक्रम का संचालन पूर्व अध्यक्षा सुनीता कूकड़ा ने किया।

## रूपांतरण शिल्पशाला

**उधना।**

अभातेममं के तत्त्वावधान में महिला मंडल द्वारा साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में रूपांतरण शिल्पशाला (प्रतिक्रमण) कार्यशाला मधु देरसारिया की अध्यक्षता में आयोजित हुई। ट्रस्टी कनक बरमेचा, पूर्वाध्यक्ष पुष्पा बैद, निधि सेखानी, गुजरात प्रभारी श्रेया बाफना जयंती सिंघी की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र व मंडल की बहनों के गीत से हुई। सभा उपाध्यक्ष मुकेश बाबेल ने अपने विचार रखे।

साध्वी लब्धिश्री जी ने प्रतिक्रमण का अर्थ बताया। साध्वीश्री जी के सान्निध्य में श्रुतोत्सव कार्ड का विमोचन हुआ। मंत्री सुनिता चोरड़िया ने संचालन किया। आभार ज्ञापन पूर्व अध्यक्षा मंजु नोलखा ने किया।

## आजादी के अमृत महोत्सव

**चेन्नई।**

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, चेन्नई के द्वारा कन्या सुरक्षा सर्कल पर माधावरम जैन पब्लिक स्कूल में स्वतंत्रता के ७५ वर्ष पूरे होने पर आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सर्वप्रथम महिला मंडल ने मुनि सुधाकर जी के दर्शन कर मंगलपाठ श्रवण किया। तत्पश्चात ध्वजारोहण कार्यक्रम हुआ।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी का स्वागत चेन्नई महिला मंडल की अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने किया। माणकचंद रांका ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल अध्यक्ष-मंत्री के साथ प्रचार-प्रसार मंत्री रीमा मांडोत सहित पदाधिकारीगण, सदस्य एवं अन्य गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री रामा सिंघवी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन कार्यसमिति सदस्य कविता मेडतवाल ने किया।

## परचम केसरिया शक्ति का कार्यशाला

**कटक।**

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अभातेममं के तत्त्वावधान में परचम केसरिया शक्ति का कार्यशाला का आयोजन तेममं द्वारा आयोजित किया गया। कार्यशाला के उजाला सत्र का विषय था–'सशक्त नारी-समृद्ध समाज'। कार्यशाला की अध्यक्षता अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया, मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश गौतमचंद चोरड़िया, विशिष्ट अतिथि तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, मुख्य वक्ता एडवोकेट स्मिता जैन कुचेरिया, विशिष्ट उपस्थिति अभातेममं की महामंत्री मधु देरासरिया की रही।

मुनिश्री ने कटक तेरापंथ महिला मंडल समाज की जागरूकता के लिए लिए किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। बाल मनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण तेममं कटक की अध्यक्षा हीरा बैद ने व अतिथि परिचय इंदिरा लुणिया ने दिया। तेममं ने सुमधुर नारी गीत व प्रेरणा गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी व मंत्री शशि बिनायकिया ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिला विशेष रूप से उपस्थित रही।

## रूपांतरण कार्यशाला का आयोजन

**हैदराबाद।**

रूपांतरण थ्रू जैनिज्म प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन तेममं द्वारा अभातेममं के निर्देशानुसार साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में डी०वी० कॉलोनी में रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत भिक्षु स्वामी की गीतिका साध्वीश्री जी के मुखारविंद से हुई। साध्वी कल्पयशा जी ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। अध्यक्ष अनीता गिड़ीया ने सभी का स्वागत किया। मुख्य अतिथि समाचार पत्र 'हिंदी मिलाप' की सब-एडिटर सरिता बैद ने महिला मंडल को शुभकामनाएँ दी।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि भगवान महावीर ने कहा क्रोध पर विजय प्राप्त करने से क्षमा की प्राप्ति होती है। गुस्से को हमें क्षमा में बदलना है। इससे ही हमारी साधना की निष्पत्ति हो जाती है।

विशिष्ट अतिथि का पचरंगी पट्टे, साहित्य से तेरापंथ सभा अध्यक्ष बाबूलाल बैद, मंत्री सुशील संचेती, पूर्व अध्यक्ष सुरेश सुराणा, अणुव्रत समिति अशोक मेड़तवाल, तेयुप उपाध्यक्ष प्रमोद भंडारी द्वारा सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन मंत्री श्वेता सेठिया ने किया। संयोजिका प्रेम सुराणा का सहयोग रहा। कार्यक्रम में पदाधिकारीगण एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

## प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन

**राउरकेला।**

स्थानीय तेममं द्वारा महावीर कॉम्प्लेक्स में तेरापंथ स्थापना दिवस के साथ अभातेममं द्वारा निर्देशित प्रतिक्रमण कार्यशाला भी रखी गई। कार्यक्रम की शुरुआत पूर्वाध्यक्ष गिन्नी देवी भंसाली ने नवकार मंत्र से की। तत्पश्चात सभी बहनों ने मंगलाचरण गीत का संगान किया।

महिला मंडल अध्यक्ष ने सभी का स्वागत किया। कोमल डोसी ने प्रतिक्रमण क्या? कैसे? क्यों करना चाहिए? के बारे में समझाया। पूर्वाध्यक्ष संपत भंसाली और हेमश्री भंसाली ने मिलकर विधिपूर्वक प्रतिक्रमण करवाया।

सहमंत्री कविता डागा ने कार्यक्रम का संचालन किया। विनीता ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

## प्रतिक्रमण-आत्मशुद्धि कराने का उपक्रम

**कोयंबटूर।**

अभातेममं के निर्देशानुसार रूपांतरण शिल्पशाला के अंतर्गत प्रतिक्रमण कार्यशाला तेज स्टेशन पर आयोजित की गई। साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा कार्यशाला का शुभारंभ किया। तत्पश्चात मंगलाचरण सिद्ध स्तवन कनक प्रभा बुच्चा द्वारा हुआ।

साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी ने कहा कि अशुभ से शुभ की ओर प्रस्थान करने का नाम प्रतिक्रमण है। साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि प्रतिक्रमण अपने प्रति अपने चैतन्य की परिक्रमा करना होता है और वह आत्म स्नान आत्मशुद्धि कराने वाला है। कार्यक्रम का संयोजन व धन्यवाद ज्ञापन मोनिका कोटेचा ने किया। कार्यक्रम में भाई-बहनों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

## प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन

**राजाराजेश्वरी नगर।**

अभातेममं द्वारा निर्देशित तेममं द्वारा साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वी शिवमाला जी ने प्रतिक्रमण के महत्त्व को बताया। उन्होंने बताया कि सामायिक में १८ पाप का त्याग करने वाला व्यक्ति कुल १०८ पापों का त्याग करता है। प्रतिक्रमण को पहले अच्छे से जानना एवं समझना चाहिए। समझकर की हुई क्रिया का अधिक लाभ होता है।

अध्यक्ष लता बाफना, मंत्री सीमा छाजेड़, निवर्तमान अध्यक्ष सरोज बैद, उपाध्यक्ष सुमन पटावरी, शोभा बोथरा आदि बहनें कार्यशाला में उपस्थित थीं।

## संयम 'एक युद्ध स्वयं के विरुद्ध' कार्यशाला

**अमराईवाड़ी।**

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा रूपांतरण कार्यशाला का आयोजन शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में किया गया। जिसका विषय था–संयम - एक युद्ध स्वयं के विरुद्ध। कार्यशाला की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से साध्वीश्री जी ने करवाई। अध्यक्ष संगीता सिंघवी ने कार्यशाला में उपस्थित सभी का स्वागत किया।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने पाँचों इंद्रियों पर संयम करने की प्रेरणा दी। साध्वी संवेगप्रभाजी ने कहा कि शास्त्रों में चार चीजें दुर्लभ बताई गई हैं–मनुष्य जीवन, श्रद्धा, धर्म श्रवण और संयम में पराक्रम। संयम में पराक्रम करना बहुत दुर्लभ है। अलग-अलग अनेक उदाहरण द्वारा संयम की महत्ता बताई।

साध्वी तरुणप्रभाजी ने मन, वचन और काया इन तीन योगों पर संयम करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में स्थानकवासी समाज के श्रावक-श्राविकाओं सहित सभा, तयेप, महिला मंडल सभी की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन रेखा चिप्पड़ ने किया तथा आभार ज्ञापन मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने किया।

## असली आजादी अपनाओ

**गुवाहाटी।**

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अणुव्रत विश्व भारती द्वारा निर्देशित असली आजादी अपनाओ कार्यक्रम के तहत स्थानीय श्री दिगंबर जैन विद्यालय में एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। जिसका विषय था–'क्या प्रचुर भौतिक संसाधन ही आनंद का द्योतक है'। सर्वप्रथम विद्यालय शिक्षक बिमला झा ने समिति के पदाधिकारियों को मंचासीन कराया। तत्पश्चात अणुव्रत गीत का संगान अणुविभा के सहमंत्री छतरसिंह चोरड़िया एवं गुवाहाटी समिति के सहमंत्री अशोक बोरड़ ने किया।

अणुव्रत समिति की ओर से प्रधानाचार्य का स्वागत अणुव्रत पट्ट, अणुव्रत डायरी एवं आचार संहिता के मोमेंटो से किया। परिचर्चा में विद्यालय के १५ बच्चों ने भाग लिया। सभी बच्चों को अणुव्रत समिति ने मोमेंटो द्वारा पुरस्कृत किया।

कार्यक्रम का संचालन समिति के पूर्व अध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक निर्मल सामसुखा ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में समिति के सहमंत्री जयकुमार भंसाली, कोषाध्यक्ष संजय चोरड़िया एवं कार्यकारिणी सदस्य निर्मल बैद का योगदान रहा।

✦ *संपूर्ण कर्मों का क्षय होने से आत्मा अपने स्वरूप में स्थित होती है, उसका नाम मोक्ष है।*

**– आचार्यश्री महाश्रमण**

# कार्यशाला में सिखाए तनाव प्रबंधन के गुर

**गंगाशहर।**

मुनि शांति कुमार जी, मुनि जितेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में व्यक्तित्व विकास व्याख्यानमाला के अंतर्गत 'कैसे करें तनाव प्रबंधन' विषय पर विशेष आयोजन हुआ। मुनि जितेंद्र कुमार जी ने कहा कि व्यकित को जीवन में समस्याओं से घबराना नहीं चाहिए। समस्या एक हो सकती है, परंतु उसके अनेक रूप में समाधान हो सकता है। हम अपनी जीवनचर्या में सुधार करें, व्यवहार में सात्त्विक परिवर्तन लाएँ तो तनावमुक्त जीवन जीने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

मुनि अनेकांत कुमार जी ने गीत के माध्यम से सुखी जीवन के मूल्यों को व्याख्यायित किया। मुनि श्रेयांस कुमार जी ने तपस्या की महत्ता बताई। कार्यक्रम में विनय श्यामसुखा ने अठाई की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

इस अवसर पर तेयुप के तत्त्वावधान में किशोर मंडल, गंगाशहर द्वारा आयोजित हुई 'मैं भी बनूँ प्रतिभावान' प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा की गई। तेयुप उपाध्यक्ष महावीर फलोदिया ने प्रथम स्थान पर मोनिका संचेती, द्वितीय सौंपी डागा, तृतीय स्थान पर अजीत संचेती का नाम घोषित किया। विजेताओं को संस्था के पदाधिकारियों द्वारा शील्ड से सम्मानित किया गया।

# श्रावक सम्मेलन का आयोजन

**फरीदाबाद।**

साध्वी डॉ० शुभप्रभाजी के सान्निध्य में श्रावक सम्मेलन का आयोजन हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि 'लोग जीते हैं शायद नहीं, उम्र पीते हैं' माणिक मोहिनी का ये वाक्य वर्तमान जीवनशैली पर करारा व्यंग्य है। आज की समस्या है कि कैसे जीएँ? इस प्रश्न को उत्तरित करते हुए आचार्यश्री तुलसी ने लिखा—सभी कलाएँ विकलाएँ पंडित सभी अपंडित हैं, नहीं जानते कैसा जीना केवल महिमा मंडित हैं।

साध्वी कांतयशा जी ने गीत का संगान, साध्वी अनन्यप्रभाजी ने वक्तव्य, महिला मंडल अध्यक्षा सुमंगला बोरड, अणुव्रत समिति अध्यक्ष आई०सी० जैन, सभा अध्यक्ष गुलाब बैद ने भावाभिव्यक्ति दी। मंगलाचरण बहादुर सिंह दुगड़ और कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री संजीव बैद द्वारा किया गया।

साध्वीश्री द्वारा राखी पर्व पर आयोजित राखी प्रतियोगिता के रिजल्ट में प्रथम स्थान संयुक्त रूप से सूर्यकांता बैद व पूजा दुगड़, द्वितीय स्थान सुशीला दुगड़, तृतीय स्थान सुनीता नाहटा और चतुर्थ स्थान कमला लुनिया का रहा। कार्यक्रम में सभी की अच्छी उपस्थिति रही।

# नसीब अपना-अपना प्रतियोगिता का आयोजन

**सरदारपुरा, जोधपुर।**

सरदारपुरा स्थित तातेड़ गेस्ट हाउस में साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में नसीब अपना-अपना प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में साध्वी भव्यप्रभा जी द्वारा प्रतियोगियों को विविध प्रश्न पूछे गए।

प्रारंभिक प्रश्न का सही उत्तर देने पर प्रतियोगी को एक आध्यात्मिक संकल्प करवाया गया। उसके बाद एक प्रश्न ड्रॉ के माध्यम से पूछा गया। जिसमें प्रतियोगियों ने अपना नसीब आजमाया।

प्रतियोगिमा को सफल आयोजन में कन्या मंडल से कनिका बाफना व याना सुराना का सहयोग रहा।

इस अवसर पर सभा मंत्री महावीर चौपड़ा, उपाध्यक्ष विनय तातेड़, तेयुप अध्यक्ष महावीर चौधरी, तेममं अध्यक्षा सरिता कांकरिया, अणुव्रत समिति, जोधपुर अध्यक्षा सुधा भंसाली, सुदर्शन भंसाली, दीपक तातेड़ आदि की उपस्थिति रही।

## अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

| | |
|---|---|
| ✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021 | 51,00,000 |
| ✳ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद | 11,00,000 |
| ✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर | 5,00,000 |
| ✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना | 5,00,000 |
| ✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा | 5,00,000 |
| ✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत | 5,00,000 |
| ✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा | 5,00,000 |
| ✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा | 5,00,000 |
| ✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी | 5,00,000 |
| ✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर | 5,00,000 |
| ✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर | 5,00,000 |

# संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

## नूतन गृह प्रवेश

**जयपुर।**

रेखा देवी-ज्ञानचंद बरड़िया के नवनिर्मित भवन में जैन संस्कार विधि से प्रवेश कार्यक्रम संस्कारक राजेश धाड़ेवा ने पूरे विधि-विधान से संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा, पूर्व अध्यक्ष कल्याण मित्र राजकुमार बरड़िया, राजेंद्र बांठिया सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। अध्यक्ष कल्याण मित्र ओमप्रकाश जैन, जैन संस्कार विधि के संयोजक श्रेयांस बैंगानी ने परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

## नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

**भरूच।**

सुजानगढ़ निवासी, भरूच प्रवासी विजयसिंह कोठारी-मंजु देवी कोठारी के नए शोरूम का जैन संस्कार विधि से शुभारंभ किया गया।

संस्कारक जिनेंद्र कुमार कोठारी ने जैन संस्कार विधि से कार्यक्रम करवाया। कल्पेश जैन छाजेड़ विधि संपन्न करवाने में सहायक रहे। महिला मंडल की पूर्व अध्यक्षा अनिता कोठारी की उपस्थिति रही।

## नव प्रतिष्ठान शुभारंभ

**जयपुर।**

नरेश भंसाली, कौशल्या देवी, लेखराज जेसवानी के नव प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक गौतम बरड़िया व सौरभ ने पूरे विधि-विधान से मंत्रोच्चार करते हुए संपन्न करवाया।

तेयुप जयपुर के सहमंत्री प्रवीण जैन की उपस्थिति रही। परिवार को तेयुप की ओर से मंगलभावना पत्र भेंट किया गया।

## नामकरण संस्कार

**जयपुर।**

अल्पना-रोहन गंग की सुपुत्री संतोष रविन्द्र गंग की सुपौत्री का नामकरण संस्कार संस्कारक श्रेयांस बैंगानी व सौरभ जैन ने विधिपूर्वक संपन्न करवाया।

तेयुप के अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा, संगठन मंत्री मोहित गधैया सहित अन्य गणमान्य जन उपस्थित रहे। तेयुप की ओर से मंगलभावना पत्र भेंट किया गया।

## नामकरण संस्कार

**पर्वत पाटिया।**

लक्ष्मी देवी-गौतम पितलिया के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से संपादित किया गया। मुख्य संस्कारक पवन बुच्चा एवं सहयोगी संस्कारक चंद्रप्रकाश परमार ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम संपन्न करवाया।

गौतम पितलिया ने पधारे हुए संस्कारक एवं तेयुप के प्रति आभार ज्ञापित किया।

## नामकरण संस्कार

**साउथ कोलकाता।**

पढिहारा निवासी, साउथ कोलकाता प्रवासी देवांश-स्वाति दुगड़ के सुपुत्र एवं सुपुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से अभातेयुप जैन संस्कारक एवं उपासक महेंद्र दुगड़, संस्कारक प्रदीप सिंघी, संस्कारक राकेश नाहटा व रोहित दुगड़ ने संपूर्ण विधि एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

दादा नवीन दुगड़ ने संस्कारकों एवं तेयुप साउथ कोलकाता के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। दुगड़ परिवार का आभार ज्ञापन किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
5 - 11 सितंबर, 2022



✦ *केवल अपने लिए कुछ करना सामान्य बात होती है, दूसरों के कल्याण के लिए कुछ करना विशेष बात होती है।*
**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# ज्ञानशाला दिवस के कार्यक्रम

## गोरेगाँव (मुंबई)

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला दिवस मनाया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। साथ ही नेशनल लीडर का फेंसी ड्रेस, कविता, गीत, डांस और वक्तव्य का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के शुरुआत में नन्हे-मुन्ने बच्चों की रैली का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत बच्चों के मंगलाचरण द्वारा हुई।

पधारे हुए सभी का स्वागत ज्ञानशाला प्रशिक्षिका मनीषा मुणोत ने किया। ज्ञानशाला परामर्शक चतर देवी सिंघवी एवं जोन सह-संयोजिका भावना सांखला ने बच्चों को ज्ञानशाला दिवस एवं १५ अगस्त के बारे में समझाया, मंजु सिंघवी ने बच्चों को प्रश्न पूछे।

आभार ज्ञापन अल्का आच्छा ने किया। कार्यक्रम का संचालन अंजू चंडालिया ने किया। सभी बच्चों को प्रोत्साहन पुरस्कार वितरण किए गए। प्रशिक्षक, बच्चों एवं अभिभावकों की सराहनीय उपस्थिति रही।

## लालबाग

शासनश्री साध्वी सोमलता जी की प्रेरणा से दक्षिण मुंबई ज्ञानशाला की सह-ज्ञानशाला के रूप में लालबाग ज्ञानशाला का शुभारंभ हुआ। इस ज्ञानशाला को संचालित करने का कार्यभार प्रशिक्षिका रेणु बोलिया एवं भावना धाकड़ को दिया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रशिक्षिको के द्वारा मंगलाचरण से हुई। सभी का स्वागत एवं संचालन प्रशिक्षिका विजयश्री डागलिया ने किया।

मुंबई ज्ञानशाला से आंचलिक संयोजिका अनिता परमार, आंचलिक सह-संयोजिका राजश्री कच्छारा, विभागीय संयोजिका अंजु चौधरी, मघवागणी जॉन संयोजिका वनिता धाकड़, सह-संयोजिका शिल्पा डागलिया सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

## मंडी गोविंदगढ़

तेरापंथी महासभा के निर्देशानुसार साध्वी प्रसन्नयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, तेयुप एवं महिला मंडल की तरफ से तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मन्नत जैन एवं रौनक जैन के मंगलाचरण से हुई। इसके बाद भव्य जैन, नैतिक जैन, हार्दिक जैन, अनन्या जैन, रिदम जैन, विवान जैन, नेत्रिका जैन, काव्य जैन ने अपनी-अपनी प्रस्तुति दी।

साध्वी प्रसन्नयशा जी ने कहा कि बच्चों में संस्कार निर्माण की कार्यशाला का नाम ज्ञानशाला है। ज्ञानशाला का उपक्रम सारे देश में बड़े ही उत्साह से चल रहा है। उन्होंने कहा कि कि बच्चों को ज्ञानशाला जरूर भेजना चाहिए, ताकि संस्कार निर्माण से बच्चों का और उनके माता-पिता का भविष्य उज्ज्वल बन सके।

पंजाब प्रांतीय तेरापंथी सभा के चेयरमैन सुरेंद्र मित्तल, महामंत्री सुनील खुल्लर, तेरापंथ सभा, मंडी गोविंदगढ़ के निवर्तमान अध्यक्ष जोगिंदर पाल गर्ग, मंत्री रजत जैन, महिला मंडल अध्यक्ष सुनीता जैन, ज्ञानशाला संचालक संदीप जैन, पंजाब खत्री चेतना मंत्र चेरिटेबल ट्रस्ट, खन्ना के प्रधान राजेंद्र पुरी, लक्ष्मी मित्तल ने अपने विचार रखे।

कार्यक्रम के अंत में सभी बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी माधुर्यप्रभा जी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में पदाधिकारीगण, सदस्यों एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

## बालोतरा

न्यू तेरापंथ भवन में मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस मनाया गया। तेरापंथी महासभा व ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा पूरे भारत में ज्ञानशाला दिवस मनाया जा रहा है। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी बच्चों द्वारा जागृति रैली में बच्चों को मुनिश्री द्वारा प्रेरणा देकर मंगलपाठ सुनाया गया।

सभा उपाध्यक्ष राणमल फोला मेहता व सभा संगठन मंत्री प्रकाश बालड़ द्वारा रैली को हरी झंडी दिखाकर रेली रवाना की गई।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि गणाधिपति पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने संघ को बहुत अवदान दिए उन्होंने मानव जीवन का मार्गदर्शक कर उनका कल्याण हो ऐसा कार्य किया।

मुनि जयेश कुमारजी ने कहा कि जीवन में संकल्प शक्ति का बहुत महत्त्व है। संकल्पी व्यक्ति ही जीवन में सफल बन सकता है। ज्ञानार्थी अंशुल छाजेड़ व प्रियल बांठिया ने अपने ज्ञानशाला से जुड़ने का अनुभव साझा किया। ज्ञानशाला प्रशिक्षकों द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। ज्ञानशाला संयोजक राजेश बाफना ने बताया कि बालोतरा में कुल ६ जगह ज्ञानशाला आयोजित होती हैं, उसमें २५० ज्ञानाशाला ज्ञानार्थी हैं। तेयुप के पदाधिकारी व किशोर मंडल के संयोजक व किशोर मंडल के सदस्यों ने कार्यक्रम में सहयोग किया। कार्यक्रम का संचालन उर्मिला सालेचा द्वारा किया गया।

## टी-दासरहल्ली

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी के सान्निध्य एवं तेरापंथ सभा ट्रस्ट के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। ज्ञानशाला दिवस की शुरुआत बच्चों द्वारा नमस्कार महामंत्र व अर्हम वंदना से हुई। सभा ट्रस्ट मंत्री प्रवीण बोहरा ने स्वागत वक्तव्य दिया। ज्ञानशाला बच्चों द्वारा प्रस्तुति दी गई।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि लगभग अर्धसदी पूर्व से हमारे समाज में सभा के निर्देशन में ज्ञानशालाएँ चल रही हैं तथा इसकी निष्पत्ति सामने आ चुकी है। बालक-बालिकाएँ आध्यात्मिक संस्कार संपन्न बनकर अपने जीवन को विभूषित कर रहे हैं। शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रदत्त ज्ञानशाला का अवदान आज समाज के लिए उपहार बन गया है।

इस अवसर पर सभा ट्रस्ट संस्थापक अध्यक्ष लादुलाल बाबेल, तेयुप अध्यक्ष दिलीप पोखरना, कन्हैयालाल गांधी, महिला मंडल अध्यक्षा रेखा मेहर, नम्रता पितलिया ने ज्ञानशाला दिवस पर विचार रखे। साध्वी मंजुरेखाजी, साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी एवं साध्वी चेलनाश्री जी ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला प्रशिक्षिका एवं महिला मंडल मंत्री गीता बाबेल ने किया एवं आभार ज्ञापन दीपिका गांधी ने किया।

## फरीदाबाद

साध्वी डॉ० शुभप्रभाजी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वी शुभप्रभाजी ने कहा कि संसार में सबसे अच्छी दवा क्या है–हँसी, सबसे ज्यादा संपत्ति क्या है–बुद्धि, सबसे ज्यादा तीक्ष्ण हथियार कौन सा है–धैर्य, सबसे सुपर उपयोगी क्या है–ज्ञानशाला। ज्ञानशाला को व्यक्तित्व निर्माण की फैक्ट्री कहा जा सकता है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि बच्चों की आदतों का सही निर्माण हो इसके लिए अभिभावक जागरूक बनें, उनका विवेक जगाएँ। संस्कारों का सिंचन दें, उन्हें परंपराओं से परिचित कराएँ।

साध्वी कांतयशा जी ने गीत का संगान किया। साध्वी मंदारयशा जी ने कहानी के माध्यम से बच्चों को जागरूक किया। सभा ट्रस्टी सज्जन जैन, ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका मंजु लुणिया, महिला मंडल अध्यक्षा सुमंगला बोरड़, बहादुर सिंह दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। ज्ञानार्थियों ने कविता पाठ किया, झलकियों की सुंदर प्रस्तुति दी तथा नुक्कड़ नाटिका, मंगलाचरण ज्ञानशाला के बच्चों ने किया। आभार ज्ञापन निकिता जैन ने किया। कार्यक्रम का संचालन ललिता बैद द्वारा किया गया।

# ज्ञानशाला की अनुशासन यात्रा

**पीलीबंगा।**

साध्वी रचनाश्री जी की प्रेरणा से तेयुप द्वारा आध्यात्मिक यात्रा (अनुशासन यात्रा) जिसमें ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएँ, किशोर मंडल, कन्या मंडल की सदस्यों को लेकर सरदारशहर स्थित अध्यात्म का शांतिपीठ पर पहुँचे। आचार्य महाप्रज्ञ दर्शन म्यूजियम को देखकर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों के साथ-साथ सभी डिजिटलाइज तरीके से आचार्य महापज्ञ की जीवनी और उनके द्वारा प्रदत्त्व अवदानों और साहित्य कला को देखकर विस्मृत भी हुए तथा प्रशंसा की।

ज्ञानशाला, सरदारशहर की प्रशिक्षिकाओं द्वारा ज्ञानशाला पीलीबंगा का अभिनंदन किया गया। तेयुप के अध्यक्ष सतीश पुगलिया ने बताया कि इस प्रकार की अध्यात्म यात्रा पहली बार परिषद द्वारा की गई है। यात्रा का प्रारंभ साध्वी रचनाश्री जी के मंगलपाठ का श्रवण कर हुआ। यात्रा संयोजक पुनीत नौलखा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

# सर्वसिद्धिदायक मंत्र है भक्तामर

**गंगाशहर, बीकानेर।**

जैन धर्म में भक्तामर स्तोत्र का बहुत महत्त्व है। प्राचीन काल में आचार्यश्री मानतुंग ने इसकी चमत्कारिक रचना की थी। लाखों जैन एवं जैनेतर धर्मावलंबी प्रतिदिन इसका पाठ करते हैं। ऐसे प्राचीन एवं चमत्कारिक भक्तामर स्तोत्र का तेरापंथ भवन में सामुहिक पाठ हुआ। जिसमें १३६ जोड़ों ने स्वास्तिक के विशेष आकार में बैठकर उच्चारण द्वारा इसका अनुष्ठान किया।

मुनि शांति कुमार जी, मुनि जितेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित इस भव्य अनुष्ठान में भीलवाड़ा से समागत संजय भानावत एवं वनिता भानावत ने लयबद्ध भक्तामर का पाठ करवाया।

तेरापंथी सभा, तेयुप, तेमम द्वारा आयोजित इस अनुष्ठान की व्यवस्थाओं में युवकों, महिलाओं सहित किशोर मंडल एवं कन्या मंडल के सदस्यों ने सक्रियता से दायित्व निर्वहन किया।

# बूस्टर डोस से सेवा कार्य प्रारंभ

**विजयनगर।**

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में वृहद महानगरपालिका के सहयोग से २०० जरूरतमंद लोगों को कोविशिल्ड बूस्टर डोस निःशुल्क लगाया गया। मुनि रश्मि कुमार जी से मंगलपाठ श्रवण कर इस कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक मंत्री मंगल कोचर एवं सहमंत्री ज्ञानू नाहटा की विशेष भूमिका रही। अध्यक्ष प्रकाश गांधी ने स्वागत किया। इस अवसर पर पदाधिकागरीगण के अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

# कोविड टीकाकरण शिविर

**गुवाहाटी।**

समणी निर्देशिका मधुरप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में कोविड-१६ प्रतिरोधक टीकाकरण शिविर का शुभारंभ मंगल पाठ से किया गया। तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान एवं डायरेक्टर ऑफ हेल्थ, असम सरकार के सहयोग से इस टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया।

सभा के अध्यक्ष बजरंग कुमार सुराणा ने शिविर की संपूर्ण जानकारी दी। इस शिविर के संयोजक विजयराज डोसी, सह-संयोजक संजय चोरड़िया व हितेश चोपड़ा हैं। शिविर में सभा के उपाध्यक्ष पवन जम्मड़, संगठन मंत्री छतर सिंह भदानी, वरिष्ठ सहमंत्री राजकुमार बैद सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

# जीवन आश्रम में सेवा कार्य

**साउथ हावड़ा।**

तेयुप, साउथ हावड़ा द्वारा जीवन आश्रम में सेवा कार्य किया। कार्यक्रम का प्रारंभ परिषद के सामुहिक मंत्रोच्चार के साथ किया। परिषद के उपाध्यक्ष ज्ञानमल लोढ़ा ने सभी का स्वागत किया। आश्रम के लगभग ८५ मानसिक विकलांग रोगियों में खाद्य सामग्री वितरण किया गया।

कार्यक्रम में हितेंद्र बैद, सहमंत्री अमित बेगवानी, कोषाध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक विजय राज पगारिया, सामाजिक कार्य के संयोजक मनीष बैद, सुमित जैन, सहित सुमित नाहटा, गौतम हीरावत की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन सामाजिक कार्यों के पर्यवेक्षक एवं कोषाध्यक्ष विजय राज पगारिया ने किया। आभार ज्ञापन संयोजक मनीष बैद ने किया।

# आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

**प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा**

## मनोबल कैसे बढ़ाएँ?

आगा खाँ का नाम तो आपने सुना ही होगा। बहुत बड़ा धनी व्यक्ति था वह। एक बार वह विदेश गया। फ्रांस की राजधानी पेरिस में वह लुट गया। यह समाचार शहर में फैला और आगा खाँ पत्रकारों से घिर गया। उन्होंने प्रश्नों की बौछार कर दी। क्या हुआ? कहाँ हुआ? कितने व्यक्ति थे? आपके मन पर इसका क्या असर है? आदि। आगा खाँ ने सोचा–ये पत्रकार लोग पता नहीं उलटा-सीधा क्या छाप दें। इन्हें तो ऐसी बात बतानी चाहिए, जिसका ये दुरुपयोग न कर सकें। वह मुसकुराता हुआ बोला–'आप लोग पत्रों में यह संवाद दीजिए कि आगा खाँ फ्रांस की राजधानी पेरिस में निर्भय होकर घूम रहा है।' पत्रकार देखते ही रह गए।

यह एक घटना है जो सबल मनोबल की प्रतीक है। क्योंकि जो स्थिति घटित होनी थी, वह तो घट गई। रोने-धोने या दीनता प्रकट करने से वह बदल तो नहीं सकती थी। फिर आगा खाँ ने जो कुछ कहा, वह यथार्थ भी था। क्योंकि पास में धन हो तो भय होता है। चोर का भय, टैक्स का भय, धोखेबाज लोगों का भय। न रहे बाँस और न बजे बांसुरी। भय का मूल निमित्त ही समाप्त हो जाए तो भय टिके भी कहाँ?

निर्भय होने की एक दूसरी प्रक्रिया भी है। उसमें और किसी का तो भय नहीं रहता, पर एक तत्त्व का भय रहता है। वह भी अच्छा है एक दृष्टि से। क्योंकि हम तो अनेकांतवादी हैं। एकांततः किसी भी तत्त्व को अच्छा या बुरा क्यों बताएँ? भय बुरा है, मन को दुर्बल बनाने वाला है तो एक दृष्टि से वह अच्छा भी है। इस संदर्भ में भी मैं एक घटना सुना रहा हूँ–

रोम की महारानी का हार खो गया। कीमती तो वह था ही, महारानी के मन पर चढ़ा हुआ था। बादशाह को जानकारी मिली। उसने पूरे शहर में घोषणा करवा दी कि जिस व्यक्ति को हार मिला हो, वह तीन दिन के भीतर हार लाकर सौंप दे, अन्यथा उसे मौत के घाट उतार दिया जाएगा।

हार कौन ले गया, पता नहीं चला। पर वह एक संन्यासी के हाथ लग गया। संन्यासी के मन में उसके प्रति कोई आकर्षण नहीं था, फिर भी उसने हार रख लिया और सोचा कि कोई लेने आएगा तो दे दूँगा। कुछ समय बाद संन्यासी ने राजाज्ञा से प्रसारित घोषणा सुनी। वह हार लेकर राजा के पास नहीं गया। तीन दिन बीत गए। हार के मिलने की आशा क्षीण होने लगी। चौथे दिन संन्यासी हार लेकर राजा के पास पहुँचा। बादशाह ने हार देखते ही पहचान लिया। हार उसे कब और कहाँ से मिला? यह पूछे जाने पर संन्यासी बोला–'कहाँ से मिला इस प्रश्न का उत्तर मैं नहीं दूँगा। दूसरी बात है कब मिला? जिस दिन यह गुम हुआ उसी दिन मेरे पास पहुँच गया।' यह बात सुन बादशाह उत्तेजित होकर बोला–'क्या तुमने घोषणा नहीं सुनी?' संन्यासी ने कहा–'सुनी जरूर थी। फिर भी मैं तीन दिन तक उसे लौटाने नहीं आया। यह सोचकर नहीं आया कि लोग कहेंगे मौत के डर से हार लौटा रहा है।' आज चौथे दिन क्यों आया?' इस प्रश्न के उत्तर में संन्यासी शांत भाव से बोला–'मुझे मौत का भय नहीं पर पाप का भय तो है। किसी दूसरे की वस्तु मैं अपने पास रखता तो पापी नहीं हो पाता।' अपनी घोषणा के अनुसार बादशाह से मृत्युदंड दे सकता था, पर वह संन्यासी के चरणों में प्रणत हो गया। जो व्यक्ति मौत से नहीं डरता, मौत उसके पास झटपट आ ही नहीं सकती।

यह घटना भी सबल मनोबल की सूचना देने वाली है। मनोबल की अपेक्षा हर स्थिति में रहती है। इसके लिए आप मनोबली व्यक्तियों से प्रेरणा लें। उनके प्रवचन सुनें और पढ़ें। मनोबल को बढ़ाने वाले विचार भले ही आपके मन से निकल जाएँ। उन शब्दों को आप भले ही भूल जाएँ। पर अशब्द संस्कारों को पकड़कर रखें। संस्कारां से अपने मन, प्राण और चेतना को भावित करें। इसी क्रम से मनोबल बढ़ाया जा सकता है।

## साधना की सीधी पृष्ठभूमि : आहार-विवेक

साधना के साथ आहार का बहुत गहरा संबंध है। आहार जितना शुद्ध, सात्त्विक और सुपाच्य होता है, साधना उतनी ही ऊँची हो सकती है। प्रतिकूल आहार साधना के लिए विक्षेपकारी प्रमाणित हुआ है। इस दृष्टि से आहार-शुद्धि पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। आज के युग में आहार-शुद्धि का प्रश्न बहुत जटिल हो रहा है। आहार के उत्पादन और उससे भी आगे बढ़ें तो अर्थ के अर्जन से लेकर आहार करने तक की पूरी प्रक्रिया दूषित है। ऐसी स्थिति में साधकों को शुद्ध आहार कैसे उपलब्ध हो सकता है?

साधक साधना करता है। पर यथेष्ट परिणाम नहीं आता, इसका एक कारण प्रतिकूल भोजन भी है। कुछ लोग अनुकूल और प्रतिकूल भोजन का विवेक नहीं कर पाते। इसलिए इस विषय पर गंभीर चिंतन की आवश्यकता है।

मनुष्य अर्थ का अर्जन करता है, उसमें वह अपने स्वास्थ्य, शांति और जीवन को खो रहा है। कौन समझाए उसे? समस्या यहीं तक रुकी हुई नहीं है। भोजन पकाने और परोसने का भी एक तरीका होता है। शुद्ध भोजन भी पकाने और परोसने वाले की अशुद्ध भावधारा से दूषित हो जाता है। यह श्रुत और पठित ही नहीं, अनुभूत सत्य है। भोजन पकाने और करने के समय जो मानसिक प्रसत्ति रहती है, उसका प्रभाव शरीर और मन दोनों पर देखा जाता है।

आहार जीवन का अनिवार्य अंग है। कोई भी देहधारी प्राणी आहार के बिना जी नहीं सकता। यह तथ्य सही है फिर भी सापेक्ष है क्योंकि अंतराल गति में जीव अनाहार भी रहता है। एक शरीर को छोड़ने के बाद जीव अपने नए उत्पत्ति स्थान में जाकर उत्पन्न होता है, उस बीच के काल को अंतराल गति कहा गया है। उस काल में एक समय लगे तब तो आहार की अपेक्षा नहीं रहती, किंतु दो, तीन और चार समय वाली अंतराल गति में जीव को आहार के बिना ही रहना पड़ता है।

आहार के मुख्य तीन प्रकार हैं–ओज आहार, रोम आहार और कवल आहार। आज की हमारी चर्चा का प्रमुख विषय कवल आहार है। आहार के संदर्भ में साधुओं के लिए तीन प्रकार की एषणाएँ बताई गई हैं–गवेषणा, ग्रहणैषणा और परिभोगैषणा।

मुनि भिक्षा के लिए उपस्थित हो तो पहले गवेषणा करे। 'गौरिव एषणा-गवेषणा' जिस प्रकार गाय अपने खाद्य को ही ग्रहण करती है, अखाद्य को छोड़ देती है। इसी प्रकार मुनि भी सबसे पहले इस बात पर अपना ध्यान केंद्रित करे कि वह जो कुछ ग्रहण कर रहा है, उसके लिए ग्राह्य है या नहीं।

ग्रहणैषणा का मतलब है–आहार ग्रहण करते समय सूक्ष्मता से ध्यान देना कि वह किस रूप में, किन विचारों और व्यवहारों से आहार का ग्रहण कर रहा है।

**(क्रमशः)**

# साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

**(८६)**

ज्योतिर्मय चिन्मय आर्यदेव!
युग की आस्था के सेतुबन्ध।
तुम क्रांतिदूत भारत-सपूत
तुम महाकाव्य के मधुर छंद।।

तुम युगद्रष्टा युगस्रष्टा तुम
युग की गतिविधि के विज्ञाता
युगबोध दिया संबोध दिया
युग जीवन के अनुसंधाता
युग की हर जटिल समस्या का
हल खोज बने युग-निर्माता
युग की अनुगूंज सुनी तुममें
तुम युग-वाङ्मय के उद्गाता
युग की साँसों में रमण करे
गुरुदेव! तुम्हारी सुयश गंध।।

तुम तुंग हिमाचल शिखर भव्य
तुम गंगा की निर्मल धारा
तुम विमल हृदय उच्छ्वास नव्य
चमके नभ में बन ध्रुवतारा
अभिनव समाज-दर्शन देकर
काटी झट जड़ता की कारा
निज पर जड़ता की कारा
निज पर शासन : फिर अनुशासन
गुंजित नभ-धरती में नारा
अपने युग के अवधूत अमल
जनजीवन के तुम परिस्पंद।।

उत्साह उमंग रवानी का
दरिया बनकर बहना सीखा
छूने हर शिखर सफलता का
तुमने सब कुछ सहना सीखा
सुरधनुष सलोने रचे बहुत
अपने भीतर रहना सीखा
कब कैसे क्या हो पाएगा
तुमने न कभी कहना सीखा
अक्षय ऊर्जा के दिव्य कोष!
बाँटी सबको ऊर्जा अमंद।।

**(८७)**

व्याकुल मेरे प्राण हो रहे तुम ही प्यास बुझाओ।
नील गगन में भटक रहा खग तुम ही पंथ दिखाओ।।

माप चुके तुम इस जीवन में सागर की गहराई
गुणवत्ता से हासिल कर ली सुरगिरि-सी ऊँचाई
विगत अनागत तार तोड़कर वर्तमान में लाओ।।

चाह तुम्हारी इस धरती पर स्वर्गलोक आ जाए
दृश्य जगत से आगे है जो मानव उसको पाए
तुम ही शांत सुधा की अविरल धारा यहाँ बहाओ।।

है मानव दिग्भ्रांत उसे अब चौराहे भटकाते
दृष्टि दिशा गति दे उसको तुम मंजिल तक पहुँचाते
कुंठाओं को तोड़ सृजन की बंदनवार सजाओ।।

**(क्रमशः)**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
5 - 11 सितंबर, 2022



✦ केवल शरीर और केवल आत्मा जीवन नहीं, दोनों के संयोग का नाम जीवन है। शरीर और आत्मा का यह संबंध स्थायी नहीं होता।
—आचार्यश्री महाश्रमण

सेवा संस्कार संगठन

# तेरांपथ समाज के मानव सेवा में दिग्गज हस्तियों का मिला व्यापक समर्थन

MEGA BLOOD DONATION DRIVE

**श्री कलराज मिश्र** (राज्यपाल -राजस्थान)

**प्रो. जगदीश जी मुखी**
राज्यपाल -आसाम

**श्री गणेशी लाल**
राज्यपाल -उड़ीसा

**श्रीमती आनंदीबेन पटेल**
राज्यपाल -उत्तर प्रदेश

**श्री भुपेन्द्र पटेल**
मुख्यमंत्री -गुजरात

**श्री बाबूलाल मरांडी**
प्रथम मुख्यमंत्री -झारखंड

**श्री पिज़ुश जनती हज़ारिका**
जल संशाधन मंत्री -असम

**श्री अर्जुन मुंडा**
केंद्रीय जन जातीय कार्य मंत्री

**श्री मनोज द्विवेदी**
स्वास्थ्य प्रधान सचिव जम्मू-कश्मीर

**श्री अतुल सावे**
कैबिनेट मंत्री -महाराष्ट्र

**श्री मोहम्मद मुक़ीम**
विधायक -कटक

**श्री रामनिवास गोयल**
विधानसभा अध्यक्ष -दिल्ली

**श्री विट्ठल शंकर अवस्थी**
विधायक -भीलवाड़ा

**श्री मंगत राय बंसल**
पूर्व विधायक -मोर भटिंडा

**श्रीमती फिरदौसी बेगम**
विधायक -सोनारपुर उत्तर

**श्री विवेक गुप्ता**
विधायक -जोड़ासांको

**श्री दीपक केसरकर**
विधायक -महाराष्ट्र

**श्री रविन्द्र पाठक**
विधायक -महाराष्ट्र

**श्री ज्ञानचंद जी पारख**
विधायक -पाली

Globally Supported by:
Jaishree Cotton Mills
कोठारी अशोककुमार, कैलाशचंद्र, नितिनकुमार, अंकुरकुमार तातेड़
जसोल मदुरै सूरत पाली ईरोड
मानव हैं मानवता में प्राण भरें, आओ संकल्पित हो रक्तदान करें

Empowered By:
OLD UNION
THANGA HOUSE
ANTISPOT

Powered By:
Lalwani Ferro Alloys Ltd

Promoted By:
BIKAJI

# तेरांपथ समाज के मानव सेवा में दिग्गज हस्तियों का मिला व्यापक समर्थन

**श्री सी एन रवि**
भाजपा राष्ट्रीय महासचिव

**श्री संजय गोयल**
पूर्व उप मेयर, पूर्वी दिल्ली

**श्री शरद जी कोतवाल**
आरएसएस -युवा विंग हेड

**श्री रोहित पुजारी**
विधान सभा सदस्य,ओडिशा

**श्री राहुल कस्वां**
सांसद -चुरु

**श्री राजेश गुप्ता**
भारत विकास परिषद प्रांतीय अध्यक्ष

**श्री राजेंद्र राठौड़**
उप नेता प्रतिपक्ष राजस्थान

**श्री धीरज तनेजा**
अध्यक्ष एफजेसीसीआई

**श्री सुजीत कुमार**
राज्यसभा सांसद बी.ज.द

**श्रीमती पूजा कपिल मिश्रा**
भाजपा महिला मोर्चा -उपाध्यक्ष

**श्री राजेश कोठारी**
अतिरिक्त कमिश्नर कस्टम & जीएसटी

**श्री सुनील कुमार सोनी**
लोकसभा सांसद -रायपुर

**श्री सतीश वेलंकर**
संयुक्त संगठन महासचिव -भाजपा

**डॉक्टर संजय डी कपोटे**
अपोलो हॉस्पिटल के सर्जन डायरेक्टर

**श्री बी.एस. येडुरप्पा जी**
पूर्व मुख्यमंत्री -कर्नाटक

**श्री राणा प्रताप**
RSS प्रांत प्रचारक -दक्षिण बिहार

**श्री संबित पात्रा**
राष्ट्रीय प्रवक्ता बीजेपी

**श्री मुकेश माथुर**
महासचिव- UPREU -जयपुर

**श्री मुस्ताक वानी**
निदेशक स्वास्थ्य विभाग-कश्मीर

**श्री राजेश चेतन**
अंतर्राष्ट्रीय कवि

**17 सितम्बर 2022 को अभातेयुप रक्तदान का एक नया इतिहास रचने जा रही है, जिसमें 1000 से अधिक रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जाएगा। अपेक्षित है कि सभी लोग उस दिन अपनी औद्योगिक इकाईयों, व्यवसायिक प्रतिष्ठानों, अपने संपर्क के व्यापारिक संगठनों के माध्यम से रक्तदान शिविरों का आयोजन करवा कर मानवता के इस यज्ञ में अपनी आहुती प्रदान करें। कृपया रक्तदान शिविर रजिस्ट्रेशन के लिए या अन्य किसी जानकारी के लिए www.mbdd.in पर लॉगिन करें।**

www.facebook.com/megablooddonationdrive | www.twitter.com/iMdonatingBlood | abtyp-mbdd | www.mbdd.in

✦ *विद्या संस्थानों में लौकिक विद्या पढ़ाई जाती है। इसके साथ अलौकिक अर्थात् आत्मविद्या पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।*
**–आचार्यश्री महाश्रमण**

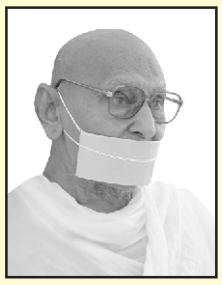

# संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

## बंध-मोक्षवाद

### मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

**भगवान् प्राह**

**(१७) वर्तमानक्षणग्राहि, ऋजुसूत्रं नयो भवेत्।**
**शब्दाश्रयास्तु शब्दाद्याः, पर्यायमाश्रिताः नयाः।।**

*जो वर्तमान क्षणवर्ती पर्याय को ग्रहण करता है, वह ऋजुसूत्र नय है। शब्द, समभिरूढ़ और एवंभूत–ये तीनों शब्दाश्रयी पर्यायाथिक नय हैं।*

**(१८) पूर्वं निक्षिप्यते वस्तु, तन्नये नाधिगम्यते।**
**प्रमाणेनाऽपि वीक्षा स्याद्, सकलादेशमाश्रिता।।**

*पहले वस्तु का निक्षेप–पर्याय के अनुरूप बाह्य विन्यास किया जाता है। फिर उसे नय के द्वारा जाना जाता है। प्रमाण के द्वारा होने वाला वस्तु का ज्ञान सकलादेश कहलाता है।*

**(१९) नयदृष्टिरनेकांतः स्याद्वादस्तत्प्रयोगकृत्।**
**विभज्यवाद इत्येष, सापेक्षो विदुषां मतः।।**

*वस्तु के एक धर्म-विशेष को जानने वाली नयदृष्टि का नाम है अनेकांत। उसका वचनात्मक प्रयोग स्याद्वाद, विभज्यवाद अथवा सापेक्षवाद है।*

पदार्थ अपने में कितने तथ्यों को समेटे हुए हैं, यह जानना सहज नहीं है। बड़े-बड़े वैज्ञानिक भी असफल रहे हैं। उसके विराट् दर्शन के सामने वे बौने साबित हुए हैं। भले, वे हार मानें या न मानें किंतु इतना स्पष्ट है कि वे उसकी पूर्ण थाह नहीं पा सकते। उसकी थाह पाने का एक ही मार्ग है कि हमारे पास पूर्ण ज्ञान हो। पूर्ण ज्ञान-कैवल्य ज्ञान में वस्तु का संपूर्ण रूप प्रतिभासित हो सकता है। आत्मद्रष्टाओं ने उसे जाना है, लेकिन उसके अनंत धर्मों को प्रतिपादन में वे भी समर्थ नहीं हुए हैं। इसका कारण बहुत स्पष्ट है कि वाणी सीमित है, शब्द सीमित है वह वस्तु में स्थित अनंत धर्मों का प्रतिपादन नहीं कर सकता है।

प्रत्येक द्रव्य अपने में अनंत विरोधी-अविरोधी धर्मों–स्वभावों को लिए हुए हैं। उसमें सामान्य धर्म भी है और विशेष भी, वह नित्य भी है, अनित्य भी है। वह शाश्वत भी है और अशाश्वत भी है। वह है भी और नहीं भी है। इस प्रकार उसमें अनंत धर्म–स्वभाव हैं। लेकिन ये सब सापेक्षदृष्टि से यथार्थ हैं। जिस दृष्टि से 'सत्' है उस दृष्टि से असत् नहीं है, जिस दृष्टि से असत् है उस दृष्टि से सत् नहीं है। सत् की दृष्टि से सत् है और असत् की दृष्टि से असत् हैं। इसी प्रकार सामान्य-विशेष, नित्य-अनित्य, भेद-अभेद आदि जिज्ञासाओं का शमन किया जा सकता है। वृक्षत्व धर्म की अपेक्षा से सभी वृक्ष समान हैं, चेतन धर्म की अपेक्षा सभी जीव समान हैं, अचेतनत्व की दृष्टि से समस्त जड़ पदार्थ समान हैं। नीम, बबुल, आम, पीपल, बरगद आदि भेदों की दृष्टि से विशेष भी हैं। लेकिन दोनों धर्म हैं एक ही द्रव्य-पदार्थ में। एक व्यक्ति पिता है, पुत्र है, पति है, भाई है, चाचा है, दादा है, नाना है आदि। कितने विरोधी दिखलाई देने वाले बिंदु एक में उपलब्ध हैं। यदि यहाँ अपेक्षा को ध्यान में न रखें तो उलझन आ सकती है और अपेक्षा रखकर चला जाए तो कहीं उलझन नहीं है। **(क्रमशः)**

# अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

## धर्म बोध

### शील धर्म

**प्रश्न ४** : शील (संयम साधना) के उत्कृष्ट भेद कितने हैं?

**उत्तर** : मुनि के शील–संयम साधना के उत्कृष्ट १८,००० भेद हो जाते हैं। चर्या के इन प्रकारों में मुनि को सतत जागरूक रहना होता है, तभी उसका चारित्र निर्मल व पवित्र रह सकता है। इन भेदों को समझाने के लिए एक गाथा उपलब्ध होती है, वह इस प्रकार है–

**जे णो करंति मणसा, णिज्जिय, आहारसन्ना सोइंदिये।**
**पुढ़विकायारंभं, खंतिजुत्ते ते मुणी वंदे।।**

यह एक गाथा है। दूसरी गाथा में 'खंति' के स्थान पर 'मुत्ति' आता है शेष श्लोक ज्यों का त्यों है। इस प्रकार १० गाथाओं में क्रमशः दस धर्मों के नाम आते हैं। फिर ग्यारहवीं गाथा में 'पुढ़वी' के बाद 'आउ' शब्द आएगा। पुढ़वी के साथ १० धर्मों का परिवर्तन हुआ था, उसी प्रकार 'आउ' के साथ भी होता है। फिर 'आउ' के बाद क्रमशः तेउ, वाउ, वणस्सई, बेइंदिय, तेइंदिय, चउरिंदिय, पंचिंदिय व अजीव–ये दस शब्द आते हैं। प्रत्येक के साथ दस धर्मों का परिवर्तन होने से (१० x १०) एक सौ गाथाएँ हो जाती हैं। १०१वीं गाथा में सोइंदिय के बाद क्रमशः चक्खुरिंदिय, घाणिंदिय, रसनेंदिय, फासिंदिय शब्द आता है। एक-एक इंद्रिय के १०० होने से पाँच इंद्रियों के (१०० x ५) ५०० होते हैं। ५०१वीं गाथा में आहार सन्ना के बाद भय सन्ना, फिर मेहुण सन्ना व परिग्गह सन्ना शब्द आते हैं। एक संज्ञा के ५०० होने से चार संज्ञा के (५०० x ४) = २००० होते हैं। फिर मणसा के स्थान पर वयसा व फिर कायसा आते हैं। फिर करंति की जगह कारयंति, फिर समणुजाणति शब्द आते हैं। एक-एक के ६००० होने से तीनों के (६००० x ३) = १८,००० हो जाते हैं। **(क्रमशः)**

# उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

## आचार्य हेमचंद्र

उदयन मंत्री ने प्रमुदित होकर श्रेष्ठी चाचिग को गले से लगाया और साधुवाद देते हुए कहा–'मुझे अर्पण अरने से तुम्हारे पुत्र का वह विकास नहीं होगा जो विकास गुरु चरणों में संभाव्य है। गुरु की सन्निधि में तुम्हारा यह पुत्र गुरुपद को प्राप्त कर बालेन्दु की तरह त्रिभुवन में पूज्य होगा। मंत्री उदयन के इस परामर्श को स्वीकार करता हुआ श्रेष्ठी चाचिग देवचंद्रसूरि के पास गया और उसने अपना पुत्र गुरु को समर्पित कर दिया। देवचंद्रसूरि ने उसे मुनि-प्रव्रज्या प्रदान की।

नवदीक्षित बालक चांगदेव का दीक्षा-नाम गुरु के द्वारा सोमचंद्र रखा गया था। मुनि सोमचंद्र अपने शीतल स्वभाव के कारण यथार्थ में सोमचंद्र ही थे। उनकी प्रतिभा प्रखर थी। तर्कशास्त्र, लक्षणशास्त्र एवं साहित्य की अनेक विध विद्याओं का उन्होंने गंभीर अध्ययन किया।

कुछ ही वर्षों में सोमचंद्र मुनि दिग्गज विद्वानों की गणना में आने लगे। गुरु ने धर्मधुरा-धौरेय श्रमण सोमचंद्र को योग्य समझकर वी०नि० १६३६ (वि० ११६६) वैशाख तृतीया के दिन मध्याह्न में आचार्य पद पर नियुक्त किया।

आचार्य पद प्राप्ति के समय सब प्रकार से ग्रह बलवान् थे एवं लग्न वृद्धिकारक थे। इस समय उनकी अवस्था इक्कीस वर्ष की थी। आचार्य पद प्राप्ति के बाद उनका नाम हेमचंद्र हुआ। आचार्य हेमचंद्र ने अपनी माता पाहिनी को भी इस अवसर पर आर्हती दीक्षा प्रदान की। उसे प्रवर्तिनी पद पर प्रतिष्ठित किया। नवोदीयमान आचार्य हेमचंद्र की कीर्ति दिन-प्रतिदिन विस्तार पाने लगी।

**राजवंश**

आचार्य हेमचंद्र के जीवन में सिद्धराज जयसिंह और भूपाल कुमारपाल का योग वरदान रूप सिद्ध हुआ। गुजरात रत्न सिद्धराज से आचार्य हेमचंद्र का प्रथम मिलन अणहिल्लपुर पाटण में हुआ था। गुरु देवचंद्रसूरि के स्वर्गवास के बाद हेमचंद्राचार्य खम्भात से पाटण आए थे। उस समय पाटण पर चौलुक्य वंशी नरेश सिद्धराज जयसिंह का शासन था। एक बार का प्रसंग है–अणहिल्लपुर पाटण के राजमार्ग पर बड़ी भीड़ के साथ राजारूढ़ नरेश को सामने से आते हुए देखकर आचार्य हेमचंद्र एक तरफ किसी दुकान पर खड़े हो गए थे। संयोग से नरेश का हाथी भी उनके पास आकर रुक गया। उस समय हेमचंद्र ने एक श्लोक बोला–

**कारय प्रसरं सिद्ध! हस्तिराजमशंकितम्।**
**त्रस्यन्तु दिग्गजाः किं तैर्भूस्त्वयैवोद्धृता यतः।।**

राजन! गजरात को निःसंकोच आगे बढ़ाओ। रुको मत। हाथियों के त्रास की आप चिंता न करें। इस धरती का उद्धार आपसे हुआ है। पाटणनाथ हेमचंद्र के बुद्धिबल से अत्यंत प्रभावित हुआ। उस दिन के बाद नरेश के निवेदन पर आचार्य हेमचंद्र का पदार्पण पुनः-पुनः राजदरबाद में होने लगा।

हेमचंद्राचाग्र ने 'सिद्धहेमशब्दानुशासन' नामक व्याकरण ग्रंथ रचा। इसके साथ इतिहास का मनोरम अध्याय निबद्ध है।

गुजरात रत्न सिद्धराज जयसिंह मालवा से विजय-माला पहनकर लौटे लक्ष्मी उनके चरणों में लोट रही थी। सब ओर से बधाईयाँ प्राप्त हो रही थीं। स्वागत गीत गाए जा रहे थे, पर सरस्वती के स्वागत के बिना उनका मन खिन्न था। मालव राज्य का मूल्यवान् साहित्य उनके कर-कमलों की शोभा बढ़ा रहा था, पर उनके पास न कोई अपनी व्याकरण और न जीवन को मधुर रस से ओत-प्रोत कर देने वाली काव्यों की अनुपम संपदा थी। मालव ग्रंथालय के एक विशाल ग्रंथ को देखकर सिद्धराज जयसिंह ने पूछा–'यह क्या है?' ग्रंथालय में नियुक्त पुरुषों ने कहा–'राजन! यह भोज नरेश का स्वरचित सरस्वती कंठाभरण नामक विशाल व्याकरण है। विद्वद् शिरोमणि नरेश भोज शब्दशास्त्र, अलंकारशास्त्र, निमित्तशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, राज सिद्धांत, वास्तु विज्ञान, अंकशास्त्र, स्वप्नशास्त्र, सामुद्रिकशास्त्र आदि अनेक ग्रंथों के रचनाकार थे। प्रश्न चूड़ामणि मेघमाला, अर्थशास्त्र आदि ग्रंथ भी उनके हैं।

**(क्रमशः)**

# तेरापंथ स्थापना दिवस के विविध आयोजन

## राजाराजेश्वरी नगर

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में जप-तप-त्याग के साथ चातुर्मासिक आराधना का शुभारंभ हुआ। शासनश्री साध्वी शिवमाला जी ने कहा कि जैन धर्म अनादिकालीन है जिसकी कोई आदि नहीं है। परंतु आज के दिन तेरापंथ की स्थापना हुई इसलिए विक्रम संवत् १८१७ आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा का दिन आदिकाल है।

साध्वी अमितरेखाजी ने कहा कि जैन श्रमण अहिंसा के पुजारी होते हैं। मुनि की संपूर्ण जीवन चर्या अहिंसा प्रधान है। आज के दिन आचार्य भिक्षु ने भाव दीक्षा स्वीकार कर तेरापंथ की स्थापना की।

## सिकंदराबाद

तेरापंथ भवन, डीवी कॉलोनी में साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में गुरु पूर्णिमा व तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के समुच्चारण से हुआ। साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि गुरु पुरुषोत्तम, लोकोत्तम व सर्वोत्तम होते हैं। क्योंकि गुरु केवल व्यक्ति नहीं विचार है। समग्र संस्कृति है, जीवंत पाठशाला है।

आचार्य भिक्षु विचार क्रांति के पुरोधा थे, आत्मदर्शी साधक थे। वह सत्य के प्रति जितने समर्पित थे, असत्य के प्रति उतने ही बागी थे।

साध्वी सम्प्रतिप्रभा ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी रश्मिप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया। साध्वी कल्पयशा जी ने तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना के पीछे की पृष्ठभूमि को उजागर किया।

## सरदारपुरा, जोधपुर

साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में तेरापंथ स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का मंगलचारण जगदीश धारीवाल ने किया। इस अवसर पर श्रावक जन द्वारा गीतिका का संगान किया गया।

अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुधा भंसाली ने तेरापंथ में १३ अंक की महत्ता को सभी के समक्ष रखा। सुदर्शन भंसाली ने मुक्तक के माध्यम से अभिव्यक्ति दी। साध्वी महकप्रभाजी द्वारा गीतिका का संगान किया गया। साध्वी करुणाप्रभा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। संचालन ऋषभ लुंकड द्वारा किया गया। रात्रिकालीन भक्ति संध्या का आयोजन किया गया।

## दक्षिण मुंबई

शासनश्री साध्वी सोमलता जी के सान्निध्य में गुरु पूर्णिमा व तेरापंथ स्थापना दिवस का कार्यक्रम महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ भिक्षु स्तुति से हुआ। शासनश्री साध्वी सोमलता जी ने गुरु की महिमा को बताया। उन्होंने कहा कि गुरु विघ्न विनाशक, हितचिंतक, मार्गदर्शक होते हैं। वे अंतरात्मा, परमात्मा के बंद दरवाजे को खोलने वाले होते हैं।

इस अवसर पर दादर, एलफिस्टन, दक्षिण मुंबई इत्यादि क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। साध्वी शकुंतला कुमारी जी, साध्वी जागृतप्रभाजी, महिला मंडल, रुचि बोराणा ने गीत का संगान किया। निधि बरलोटा, सभा के अध्यक्ष गणपत डागलिया, उपासिका सुमन कावड़िया ने अपने विचार रखे। साध्वीवृंद ने मधुर गीत का संगान किया।

## कांदिवली (मुंबई)

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ स्थापना दिवस एवं गुरु पूर्णिमा का कार्यक्रम संपन्न हुआ। साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि आषाढ़ी पूनम की रात्रि तेरापंथ की जीवनदात्री बन गई। यक्ष देव स्वयं आचार्य भिक्षु का मुरीद बन गया। आचार्य भिक्षु की तपस्या रंग लाई और पूरा केलवा शहर आचार्य भिक्षु के चरणों में प्रणत हो गया। तेरापंथ की स्थापना स्वतः ही हो गई।

साध्वी कुंदनयशा जी ने कविता की प्रस्तुति दी। साध्वीवृंद ने आचार्य भिक्षु के समग्र जीवन की झाँकी गीत के माध्यम से प्रस्तुत की।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण प्रेमलता कच्छारा द्वारा किया गया। मलाड सभाध्यक्ष इंदर कच्छारा, एसटीएमएफ के अध्यक्ष विनोद बोहरा, तेमम की अध्यक्षा रचना हिरण, गोरेगाँव सभा अध्यक्ष चतरमल सिंघवी ने अपने भाव व्यक्त किए। मंच संचालन मलाड तेयुप के अध्यक्ष मनोज लोढ़ा एवं आभार ज्ञापन हस्तीमल भंडारी ने किया।

## सूरत

तेरापंथ स्थापना दिवस तेरापंथ भवन में मनाया गया। मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु महान साधनाशील थे। उन्होंने अध्यात्म के क्षेत्र में व्याप्त शिथिलाचार को दूर करने का बीड़ा उठाया।

श्रद्धा, समर्पण, साहस और दृढ़ संकल्प का बल हो तो कोई कार्य असंभव नहीं रहता है यह बोधि पुरुष आचार्य भिक्षु के जीवन का संदेश है। मुनि आनंद कुमार जी ने वक्तव्य दिया।

## सिरसा

शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की सदस्याओं के मंगल गीत से हुआ। साध्वी सुमनश्री जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने संयम का दीप जलाकर सत्यमार्ग पर संकल्प के साथ अध्यात्म का उजाला बाँटा और उसे आगे बढ़ाया।

साध्वी सुरेखाजी, साध्वी मधुरलता जी, साध्वी सुमनश्री जी ने उद्गार व्यक्त किए। सभा के अध्यक्ष देवेंद्र डागा, मंत्री राजेश पुगलिया, हरियाणा प्रांतीय सभा के अध्यक्ष मक्खनलाल जैन, श्रद्धानिष्ठ श्रावक हनुमानमल गुजरानी व उपाध्यक्ष चंपालाल जैन सहित जैन समाज के अन्य श्रद्धालुओं ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

## पीलीबंगा

साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु जन्म दिवस एवं चातुर्मासिक चतुर्दसी का कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वीश्री जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने चतुर्मास में करणीय कार्यों की प्रेरणा दी। साध्वी गीतार्थप्रभाजी ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों ने किया। प्रेम कुमार नाहटा ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। संचालन सुशीला नाहटा ने किया। रात्रिकालीन मंच कार्यक्रम कन्या मंडल के द्वारा साध्वी रचनाश्री जी द्वारा रचित कहानी को प्रस्तुत किया।

## कांटाबाजी

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ स्थापना दिवस मनाया गया। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ का प्रारंभ केलवा में आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को हुआ।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु महान सत्य शोधक आचार्य थे। उनके द्वारा संस्थापित तेरापंथ धर्मसंघ में अहंकार और ममकार को कोई स्थान नहीं है, इसलिए इस संघ में श्रद्धा, विनय, समर्पण की महान परंपरा रही है।

अजय जैन के गीत से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तेरापंथ सभा से गजानन जैन, तेयुप अध्यक्ष अंकित जैन, तेमम से स्मित जैन, पूजा जैन, प्रिया जैन, संजय जैन, तेयुप प्रभारी विकास जैन सहित अनेक सदस्यगण एवं अन्य जनों की उपस्थिति रही।

## विले पार्ले, मुंबई

साध्वी राकेश कुमारी जी के सान्निध्य में अभिषेक कैलाश गोयल के निवास स्थान पर तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। तेमम अंधेरी के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेयुप विले पार्ले के अध्यक्ष अरविंद कोठारी ने विचार रखे।

साध्वी विपुलयशा जी ने पाँच घटक तत्त्वों पर विश्लेषण किया। साध्वी राकेश कुमारी जी ने तेरापंथ धर्मसंघ की उद्भव की कहानी के माध्यम से प्रकाश डाला। साध्वी मलयविभा जी ने सामुहिक गीत की प्रस्तुति दी।

रात्रि में धम्म जागरण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मयंक धाकड़, प्रकाश श्रीश्रीमाल, रेणु कोठारी ने अपनी विशेष प्रस्तुति दी।

## जीन्द

साध्वी संयमप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ स्थापना दिवस मनाया गया। साध्वी संयमप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ की नींव का मुख्य आधार है आचार्य भिक्षु की साधना तथा उनके द्वारा बनाई गई मर्यादा।

साध्वी शशिकला जी ने तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना क्यों हुई इस विषय पर प्रकाश डाला। साध्वी उज्ज्वलयशा जी, साध्वी चिन्मययशा जी ने भजनों के माध्यम से अपनी आस्था प्रकट की।

इस अवसर पर गौरव जैन, खजांची लाल जैन, सतीश जैन, कुणाल मित्तल, राजेश जैन, कांता मित्तल, नरेश जैन, प्रेक्षा जैन, रक्षिता जैन आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

## जोरावरपुरा

साध्वी सूरजप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ स्थापना दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वी सूरजप्रभा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। साध्वी डॉ० लावण्ययशा जी, साध्वी विधिप्रभाजी और साध्वी नैतिकप्रभा जी ने अपने भावों के माध्यम से तेरापंथ धर्म और आचार्य भिक्षु के बारे में विस्तार से बताया। रात्रिकालीन धम्म जागरण का आयोजन किया गया।

ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा रोचक प्रस्तुति एक परिसंवाद के माध्यम से दी गई। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री मोनिका बुच्चा ने किया।

## नालासोपारा (मुंबई)

तेरापंथ सभा भवन के प्रांगण में गुरु पूर्णिमा व तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर पर भिक्षु भक्ति का आयोजन किया गया। सभा अध्यक्ष लक्ष्मीलाल मेहता ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की। उपासिका लक्ष्मी मेहता ने तेरापंथ स्थापना दिवस एवं गुरु पूर्णिमा पर विस्तार से प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में कोषाध्यक्ष नरेंद्र सोलंकी, उपाध्यक्ष अभातेयुप जैन संस्कारक रमेश ढालावत सहित अनेक पदाधिकारीगण, सदस्यों एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

## श्रीडूंगरगढ़

सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने भिक्षु के अभिनिष्क्रमण, तेरापंथ स्थापना दिवस की महत्ता पर प्रकाश डाला।

सभा उपाध्यक्ष प्रमोद बोथरा ने विचारों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम में साध्वीवृंद की अभिव्यक्तियाँ रहीं तथा संचालन सभा मंत्री पवन सेठिया ने किया।

इस अवसर पर साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री पवन सेठिया ने किया।

# श्रीमद्जयाचार्य निर्वाण दिवस का आयोजन

**कानपुर।**

साध्वी डॉ० पीयूषप्रभाजी के सान्निध्य में श्रीमद्जयाचार्य निर्वाण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के महामंत्रोच्चार से हुआ। सभा के मंत्री संदीप जम्मड़ ने जयाचार्य के बाल्यकाल तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि में विषय में जानकारी दी। सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा ने जयाचार्य को संघ का विकास पुरुष बताया।

साध्वी सुधाकुमारी जी ने एक सुंदर गीतिका के माध्यम से तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य को श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वी भावनाश्री जी ने कहा कि जयाचार्य ने भगवती सूत्र जैसे विशालकाय आगम को पद्यानुवाद राजस्थानी भाषा में किया।

आचार्य जयाचार्य ने तेरापंथ संघ में साहित्य की अविरल धारा प्रभाहित की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दीप्तियशा जी ने किया।

# नमोत्थुणं के पाठ से होता है रोग-शोक का नाश

**माधावरम्, चेन्नई।**

मुनि सुधाकर जी ने कहा कि नमोत्थुणं का पाठ शाश्वत है। स्वर्ग लोक के चौसठ इंद्र व असंख्य देवी-देवताओं का परिचित पाठ है। नमोत्थुणं के पाठ से साधक के पाप कर्म का भी पुण्य कर्म में संक्रमण हो जाता है। मुनिश्री ने कहा कि नमोत्थुणं को प्रणिपात व शुक्रत्व के नाम से भी जाना जाता है।

मुनि नरेश कुमार जी ने कहा कि जीवन नश्वन है, एक श्वास का भी भरोसा नहीं है। पानी के बुलबुले के समान जीवन है। वह व्यक्ति धन्य होता है, जो अपने जीवन को समय रहते हुए धर्ममय बना लेता है।

✦ *पत्नी, पुत्र और पैसे की प्राप्ति तो एक पापी को भी हो सकती है, किंतु सत्संग और धर्मकथा-श्रवण का अवसर दुर्लभ होता है।*

**–आचार्यश्री महाश्रमण**

# बारह व्रत कार्यशाला के आयोजन

## भीलवाड़ा

बारह व्रत प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में किया गया। साध्वीश्री जी ने आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा निर्देशित व्रत दीक्षा पुस्तिका को जीवन में अपनाने और व्रतों के नियमों का पालन कैसे करें, इसके बारे में बताया। कार्यक्रम की शुरुआत मंत्री राजू कर्णावट ने सभी श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत एवं अभिनंदन किया। संयोजक दीपांशु झाबक और तेयुप सदस्यों ने मिलकर विजय गीत का संगान किया।

इस अवसर पर अभातेयुप सदस्य कुलदीप मारू, अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया, उपाध्यक्ष प्रदीप आंचलिया, कोषाध्यक्ष सुरेश चोरड़िया, अशोक बुरड़ सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

## वाशी

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप के तत्त्वावधान में साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में श्रावक के बारह व्रत कार्यशाला का अणुव्रत सभागार, वाशी में आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया।

साध्वी पंकजश्री जी ने कहा कि बारह व्रत अपनाएँ सुखी सदा बन जाएँ, जीवन में अगर एक व्रत भी आ जाए तो पंच पाँचवें गुणस्थान में पहुँच जाता है। साध्वी शारदाप्रभाजी ने संयोजन करते हुए कहा कि जैन धर्म का मूल है। व्रतों की आराधना, वाशी तेयुप के अध्यक्ष महावीर सोनी ने अपने विचार रखे। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष विनोद बाफना, तेयुप मंत्री महावीर हिरण, कोषाध्यक्ष विनोद बाफना, महिला मंडल संयोजिका इंदु वडाला, सह-संयोजिका अनीता चपलोत, पंकज चंडालिया, प्रवीण चोरड़िया आदि उपस्थित रहे। आभार ज्ञापन पवन परमार ने किया।

## राजराजेश्वरी नगर

अभातेयुप के निर्देशित एवं तेयुप द्वारा आयोजित बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रशाला में साध्वी अमितरेखा जी ने श्रावक समाज को बारह व्रत के विषय में समझाया। शासनश्री साध्वी शिवमाला जी ने कहा कि चेतना का जागरण व्यक्ति को शुभ योग की ओर ले जाता है।

इस कार्यशाला में लगभग ६० से अधिक श्रावकों ने भाग लिया।

कार्यशाला में ३५ श्रावक-श्राविकाओं द्वारा साध्वीश्री से बारह व्रत समझकर स्वीकार किए। कार्यशाला में तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा, महिला मंडल अध्यक्ष लता बाफना, तेयुप अध्यक्ष कौशलमल लोढ़ा, सभा तेयुप एवं तेमम के पदाधिकारीगण, सदस्यगण के साथ-साथ श्रावक समाज अच्छी संख्या में उपस्थित रहा।

## गंगाशहर

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, गंगाशहर द्वारा बारह व्रत कार्यशाला के आगाज का कार्यक्रम मुनि शांति कुमार जी, मुनि जितेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ।

मुनिश्री की प्रेरणा से इस कार्यशाला में प्रथम दिवस लगभग ६५१ की उपस्थिति रही।

## फरीदाबाद

अभातेयुप से निर्देशित बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन साध्वी डॉ० शुभप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन के प्रांगण में किया गया। इसमें २४ श्रावक व श्राविकाओं की सहभागिता रही। साध्वी कांतयशा जी ने सभी को बारह व्रत का विश्लेषण किया। अणुव्रतों की महत्ता और उन्हें सरलता से अपनाने के मार्ग से अवगत कराया गया। अंततः सभी को इसे धारण करने की प्रेरणा दी और लाभ भी बताए। इस कार्यशाला में लगभग ७ श्रावकों के द्वारा बारह व्रत दीक्षा ली गई।

# चार पचरंगी के अभिनंदन संग सतरंगी गतिमान

**उत्तर हावड़ा।**

साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में पचरंगी तपोभिनंदन मनाया गया। पचरंगी तप में लगभग १२० व्यक्तियों ने बेले से ऊपर की तपस्या कर अपनी आहूति दी। साध्वी श्री जी ने कहा कि साधना जीवन की एक प्रक्रिया है जो मन की शुद्धि के साथ दृष्टि की शुद्धि करती हुई व्यक्ति को आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक बना देती हैं। साधना की शृंखला में जैन धर्म में तप को भी आत्मशुद्धि का हेतु माना गया है।

इस अवसर पर उत्तर हावड़ा पावस प्रवास के संयोजक बुधमल लुणिया, स्थानीय सभाध्यक्ष राकेश संचेती, सभा मंत्री सुरेंद्र बोथरा ने तपस्वियों का स्वागत वक्तव्य के माध्यम से किया। कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ तथा संचालन महिला मंडल अध्यक्ष अलका सुराणा ने किया।

# ज्ञानशाला - संस्कार निर्माण की कार्यशाला

**जलगाँव।**

तेरापंथ सभा के अंतर्गत पर्युषण महापर्व के पाँचवें दिन 'कैसे हो संस्कारों का निर्माण कार्यशाला' का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम ज्ञानशाला के नन्हे बच्चों गीत से मंगलाचरण किया। उपासक सूरजमल सूर्या ने कहानी आदि के माध्यम से बच्चों को संबोधित किया।

उपासक प्राध्यापक निर्मल नौलखा ने कहा कि बच्चों को सर्वांगीण विकास में अध्यापक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। दूरगामी सोच, अहं भाव त्यागकर संगठन व अनुशासन के प्रति निष्ठावान बनें।

सभाध्यक्ष जितेंद्र चोरड़िया ने विचार रखे और ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका विनीता समदरिया ने कहा कि आचार्य तुलसी के अवदानों में सबसे श्रेष्ठ, सबसे सुंदर अवदान है–ज्ञानशाला। इसके महत्त्व को हम सभी को समझना होगा।

इस अवसर पर महिला मंडल अध्यक्ष नम्रता सेठिया, ज्ञानशाला संयोजक नोरतमल चोरड़िया, वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाएँ उपसिथत रहे। सहसंयोजिका मोनिका छाजेड़, मैना देवी छाजेड़, रीतू छाजेड़, श्रद्धा चोरड़िया का सहयोग मिला।

कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका दक्षता सांखला और आभार ज्ञापन रोनक चोरड़िया ने किया।

✦ *तर्क के द्वारा ज्ञान को वृद्धिंगत किया जा सकता है, इसलिए विद्वत्ता को बढ़ाने के लिए तर्कशक्ति का विकास आवश्यक है।*

**– आचार्यश्री महाश्रमण**

# रक्षाबंधन कार्यशाला के आयोजन

## ठाणे

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन सभा भवन, माजीवाडा में किया गया। संस्कारक कमलेश दुगड़, दिनेश चोरड़िया, विमल गादिया ने नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का शुभारंभ किया।

तेयुप सिटी अध्यक्ष अविनाश गोगड़ ने सभी का स्वागत किया। कोपरी के अध्यक्ष पवन बाफना ने संस्कारकों का स्वागत किया। सेंट्रल के अध्यक्ष सुभाष हिंगड़ ने आभार व्यक्त किया व तेरापंथ सभा ठाणे के अध्यक्ष रमेश सोनी ने कार्यशाला की प्रशंसा की।

सभी सदस्यों व महिला मंडल, कुल लगभग १०० लोगों की उपस्थिति रही तथा साध्वी जिनरेखा जी के मंगलाठ से कार्यशाला का समापन हुआ।

## अमरनगर/जाटावास

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप सरदारपुरा व जोधपुर के संयुक्त रूप से अमरनगर में साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में व जाटावास स्थित साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

मुख्य संस्कारक, युवक रत्न अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष मर्यादा कुमार कोठारी, सहयोगी संस्कारक ऋषभ श्यामसुखा, निर्मल छल्लाणी, भूपेश तातेड़ ने साथ मिलकर रक्षाबंधन को जैन संस्कार विधि से केसे मनाया जाए, उसकी जानकारी दी। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र द्वारा हुई। तेयुप के सदस्यों ने विजय गीत का संगान किया।

तेयुप, सरदारपुरा अध्यक्ष महावीर चौधरी, जोधपुर तेयुप मंत्री विनोद सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम संयोक विकास बरमेचा व अमित बोहरा ने जैन संस्कार विधि की जानकारी दी।

साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि आचार्य तुलसी ने एक सुदिर विधि प्रस्तत की और आज अभातेयुप अपनी शाखा परिषदों के माध्यम से इसे जन साधारण तक पहुँचाने का कार्य कर रही है। जैन संस्कार का यह महनीय उपक्रम जन-जन का उपक्रम बने, यही मंगलकामना।

## कांटाबाजी

मुनि प्रशांत कुमार जी, मुनि कुमुद कुमार जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। मुनिश्री ने कहा कि जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कैसे मनाना, जन्मदिन कैसे मनाना यह जानकारी सबको होनी चाहिए।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि गुरुदेव श्री तुलसी ने जैनत्व के संस्कारों को पुष्ट करने के लिए जैन संस्कार विधि अपनाने के लिए प्रेरित किया। हमारे संस्कार, सभ्यता और संस्कृति जीवन को मंगलकारी बनाने वाली है।

संस्कारक शुभंकर जैन ने सामुहिक रूप से तेरह भाई-बहन को प्रायोगिक रूप से जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन विधि करवाई। तेयुप अध्यक्ष अंकित जैन ने संस्कार की उपयोगिता को उजागर किया। संस्कारक शुभंकर जैन का साहित्य से सम्मान दीपक जैन एवं जैन प्रतीक से शाखा प्रभारी गौतम जैन ने किया। आभार ज्ञापन ऋषभ जैन ने किया।

## वडोदरा

अभातेयुप द्वारा निर्देशित रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन तेयुप द्वारा सभा भवन में किया गया। कार्यशाला में सभा, महिला मंडल एवं ज्ञानशाला सभी की उपस्थिति रही। ज्ञानशाला के कुल २६ बच्चों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

वडोदरा से संस्कारक हितेश महनोत एवं दीपक श्रीमाल ने सभी को जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन करने की विधि समझाई।

तेयुप अध्यक्ष पंकज बोलिया ने सभी का अभिनंदन किया।

## साउथ-कोलकाता

अभातेयुप निर्देशित तेयुप द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत संस्कारक एवं परिषद के सहमंत्री-प्रथम राकेश नाहटा और संस्कारक एवं अध्यक्ष रोहित दुगड़ ने सामुहिक नवकार महामंत्र के उच्चारण के साथ की।

कार्यक्रम में विशेष अतिथि, टीपीएफ, साउथ कोलकाता के अध्यक्ष आलोक चोपड़ा और मंत्री प्रवीण सिरोहिया ने मंगलभावना पत्र की स्थापना की।

आजादी का अमृत महोत्सव के कार्यक्रम

# विश्व बंधुता की भावना ही असली आजादी

### उदयपुर

अणुव्रत विश्व भारती व अणुव्रत समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में शासनश्री मुनि सुरेश कुमार जी के सान्निध्य में असली आजादी अपनाओ कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सिद्धांत सिंह राव के अणुव्रत गीत से शुरू हुए कार्यक्रम में शासनश्री मुनि सुरेश कुमार जी ने कहा कि अणुबम के दौर में अणुव्रत ही राष्ट्र के शुभ भविष्य का सार्थक संकेत है। अणुव्रत धर्म में बाँधता नहीं है, यह इंसान को सही मायने में इंसान बनाता है।

मुनि संबोध कुमार जी 'मेधांश' ने संयोजकीय वक्तव्य दिया। मुख्य अतिथि नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि अणुव्रत के छोटे-छोटे सिद्धांतों को जब लोकतंत्र में प्रवेश मिलेगा उसी दिन हम सही मायने में आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे होंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे नगर निगम अध्यक्ष गोविंद सिंह टांक ने कहा कि आचार्य तुलसी ने भारत की अखंडता और स्वतंत्रता को जीवंत बनाए रखने हेतु जो सहज परिभाषा दी है वह सारे संसार में अद्भुत और अलौकिक है।

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष संचय जैन ने कहा कि देश की आजादी के साथ ही राष्ट्रसंत आचार्य तुलसी ने असली आजादी अपनाओ का उद्घोष दिया, हमें अवलोकन करना है बीते ७५ सालों मे हमें अणुव्रत को आजादी के संपोषण हेतु कितना आत्मसात किया। कार्यक्रम के राष्ट्रीय संयोजक सुबोध दुगड़ ने प्रस्तुति दी। आभार मुख्य संरक्षक गणेश डागलिया ने किया।

कार्यक्रम में पदाधिकारीगण एवं अन्य गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

### दलखोला

अणुव्रत विश्व भारती के निर्देशन में आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत गीत से हुई। अणुव्रत आचार संहिता का वाचन उपाध्यक्ष अरविंद कुमार खेतान द्वारा किया गया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष नगराज गधैया ने स्वागत किया। विशेष अतिथि भूपेंद्र नाथ घोष ने असली आजादी अपनाओ पर अपने विचार व्यक्त किए। मौतिता घोष ने हारमोनियम के साथ रविंद्र संगीत की प्रस्तुति दी। अनिल कुमार बैद ने अणुव्रत के बारे में जानकारी दी।

भारतीय प्रांतीय पारंपरिक वेशभूषा पर आधारित एक प्रतियोगिता और बच्चों के लिए देशभक्ति गीत पर आधारित नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रांतीय वेशभूषा प्रतियोगिता का जजमेंट कांता गधैया व पवन दुधेड़िया ने और बच्चोंके नृत्य प्रतियोगिता का जजमेंट डांस टीचर अनुष्का शर्मा ने किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत मंत्री प्रेमलता जैन ने किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विनोद कोठारी, तेमम की अध्यक्षा सुमन गधैया, तेयुप अध्यक्ष रोशन गधैया के साथ अन्य भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

### भीलवाड़ा

अणुव्रत के परिप्रेक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव विषय पर संगोष्ठी का आयोजन अणुव्रत समिति द्वारा तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। संगोष्ठी की अध्यक्षता अणुव्रत समिति अध्यक्ष आनंद बाला ने किया।

साध्वी परमयशा जी ने कहा कि अणुव्रत इंसान को इंसान बनाता है। यह अपसेट से सेट कर देता है। समिति उपाध्यक्ष लक्ष्मीलाल झाबक ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया।

तेरापंथ सभा के मंत्री योगेश चंडालिया ने स्वागत भाषण दिया। साध्वी मुक्तप्रभा जी ने काव्यपाठ किया एवं अभिव्यति दी। कार्यक्रम में उपस्थित सेवा सदन के विद्यार्थियों ने गीत पर प्रस्तुति दी एवं महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने विविध लघु नाटिका द्वारा देश के जवानों और बेटियों को कैसे आगे बढ़ाया जाए यह समझाया। कार्यक्रम में पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मंत्री राजेश चोरड़िया ने एवं आभार सहमंत्री सुमन लोढ़ा ने किया।

### कटक, उड़ीसा

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर असली आजादी अपनाओ अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन स्थानीय अणुव्रत समिति द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि भारत विश्व का प्राचीन देश है इस भूमि का गौरव विशिष्ट है। इसके गौरव को बढ़ाने का दायित्व इस देश में नागरिकों पर है।

बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने अणुव्रत गीत का संगान किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि न्यायधीश नितिशा चांडक ने कहा कि भारत ने आजादी के ७५ वर्ष में बहुत उन्नति की है। आज महिलाएँ हर क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। हम सभी अपनी बहू-बेटियों को प्रोत्साहन दें।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता तुलसी राम जैन ने वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रियंका व विशाल सिंघी के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण अतिथि परिचय व आभार अणुव्रत समिति के अध्यक्ष मुकेश डूंगरवाल ने किया। समिति की तरफ से अतिथियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी व मंत्री विकास नौलखा ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में कमल बैद, संतोष सिंघी व सुनिल कोठारी कार्यकर्ताओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

### कोटा

अणुविभा के तत्त्वावधान में आयोजित आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत असली आजादी अपनाओ विषय पर साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सरिता बरड़िया एवं हेमलता जैन द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से किया गया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष अशोक दुगड़ ने आगंतुकों का स्वागत किया।

सभा मंत्री धरमचंद जैन ने कहा कि आचार्य तुलसी द्वारा चलाया गया यह संदेश आज की युगीन समस्याओं के समाधान में बहुत उपयोगी है।

अणुव्रत समिति मंत्री ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी समत्वयशा जी ने किया।

### अहमदाबाद

असली आजादी अपनाओ का अमृत महोत्सव अणुव्रत के परिप्रेक्ष्य में अणुव्रत समिति द्वारा 'क्या प्रचुर भौतिक संसाधन ही आनंद का द्योतक?' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन महाप्रज्ञ विद्या निकेतन, कोबा, गांधीनगर में किया गया। अध्यक्ष सुरेश बागरेचा ने स्वागत किया। जवेरीलाल संकलेचा ने वाद-विवाद प्रतियोगिता के नियमों की जानकारी दी। महाप्रज्ञ विद्या निकेतन प्रिंसिपल आभा दुबे की उपस्थिति में कक्षा ११ व १२ के विद्यार्थियों ने विषय पर अपने विचार रखे। बाद में भौतिक संसाधन की पक्ष व विपक्ष में बात रखने वालों का सामुहिक चर्चा वाद-विवाद वैज्ञानिक, सामाजिक, आध्यात्मिक आदि की दृष्टि से सभी ने अपनी-अपनी बातें रखी।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका वाइस प्रिंसिपल सुकृति सिन्हा, वर्षा देसाई व जवेरीलाल संकलेचा ने निभाई। निर्णायकों ने अपना निर्णय बताते हुए प्रथम मीशवा, द्वितीय वेदांत व तृतीय स्थान पर ओम के नाम की घोषणा की। अणुव्रत समिति द्वारा विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

महाप्रज्ञ विद्या निकेतन प्राध्यापिका कविता कुशवाह ने कार्यक्रम का संचालन किया एवं विद्यालय की ओर से सभी के प्रति आभार प्रकट किया गया।

## नन्हे ज्ञानार्थी का तप अभिनंदन

**राजलदेसर।**

साध्वी मंगलप्रभा जी के सान्निध्य में ७ वर्षीय नन्हे ज्ञानार्थी ऋषभ देव द्वारा नौ दिवसीय तप करने पर तप अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वी मंगलप्रभा जी ने कहा कि जैन दर्शन में मोक्ष प्राप्ति के चार द्वार बताए गए हैं। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप।

परमपूज्य आचार्यप्रवर की परम कृपा से ७ वर्ष की लघुवय में बालक ऋषभ ने ९ दिनों की तपस्या कर अद्भुत साहस का परिचय दिया है। कार्यक्रम का मंगलाचरण मंजूदेवी बाफना ने किया। इस अवसर पर साध्वी मंगलप्रभा जी, साध्वी सुमनकुमारी जी, साध्वी समप्रभाजी एवं साध्वी प्रणवप्रभाजी ने सामुहिक गीतिका का संगान कर नन्हे तपस्वी के तपोबल, मनोबल को बढ़ाया।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी समप्रभा जी ने किया। तप अनुमोदना के अवसर पर समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

इसी क्रम में पौने सात साल का नन्हा बालक जयंत विनायकिया आठ की तपस्या तथा किशोर मंडल का किशोर चंद्रेश कुंडलिया ने नौ की तपस्या लेकर तेरापंथ भवन में साध्वीश्री जी के समक्ष उपस्थित हुए। साध्वी मंगलप्रभा जी ने कहा कि सहस्त्रों घनघोर घटाएँ चातक की प्यास को नहीं बुझा सकती पर तप की एक छोटी सी बद्री उस प्यास को शांत कर सकती है।

इस अवसर पर साध्वीवृंद ने सामुहिक गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी समप्रभा जी ने किया।

## आजादी का अमृत महोत्सव

**हैदराबाद।**

आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर अणुव्रत समिति द्वारा निःशुल्क प्रभात हाई स्कूल खैरताबाद, हैदराबाद में ७५वें स्वतंत्रता दिवस की परिसंपन्नता पर विद्यार्थियों व शिक्षकों को अणुव्रत के नियमों का विवेचन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएँ व खेल-कूद का आयोजन किया गया व विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

इस अवसर पर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश एच० भंडारी व अन्य पदाधिकारी व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

## अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट

**जयपुर।**

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट अणुव्रत समिति द्वारा जयपुर पब्लिक स्कूल हवा सड़क में बच्चों की सर्वप्रथम एक कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें आचार्य तुलसी के बारे में तथा अणुव्रत की गहन चर्चा की गई। बच्चों के लिए अणुव्रत की प्रासंगिकता तथा उनके जीवन में इसकी उपादेयता तथा उपयोगिता का विश्लेषण किया गया।

इसके पश्चात बच्चों को पर्यावरण की शुद्धता तथा क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के बारे में बताया गया। तीन स्तरों पर प्रतियोगिताएँ हुई—कक्षा-३ से ५, कक्षा ६ से ८ तथा कक्षा ९ से १२ तक। प्रतियोगिता के पश्चात प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय प्रतियोगियों के नाम बताए गए। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति मंत्री डॉ० जयश्री सिद्धा, कार्यकारिणी सदस्य रचना साहनी तथा अन्य सदस्य निधि जैन, बृजलता भनोत, रामवतार सेनी, कृष्णकुमार गुप्ता, मैना जैन, मंजु कुमावत, शिवानी भाटी, रूपा अरोरा भी उपस्थित थे।

## हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन

**पूर्वांचल-कोलकाता।**

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, पूर्वांचल-कोलकाता चिकित्सा क्षेत्र में अनुपम सेवा देने हेतु कृत संकल्पित है। इसी क्रम में नेचुरल सिटी कॉम्प्लेक्स, श्यामनगर में एक हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर द्वारा किया गया। इस कैंप में करीब १०० लोगों ने भाग लिया।

कैंप में उपस्थित थे परिषद के एटीडीसी के सलाहकार नरेंद्र छाजेड़, पंकज नाहटा, अध्यक्ष राजीव खटेड़, मंत्री हेमंत बैद सहित पदाधिकारीगण एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

शिविर की सफलता में विशेष सहयोग रहा पूर्व उपाध्यक्ष धर्मेन्द्र बुचा एवं नेयुरल सिटी कॉम्प्लेक्स के कार्यसमिति सदस्यों व निवासियों का।

✦ *धर्म का ही एक महत्त्वपूर्ण अंग है सच्चाई। नैतिकता सच्चाई से जुड़ा हुआ तत्त्व है।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

## ध्वजारोहण कार्यक्रम

**ईरोड।**

स्वतंत्रता दिवस पर तेयुप द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हीरालाल चोपड़ा द्वारा ध्वजारोहण राष्ट्रगान के साथ आयोजन हुआ। तत्पश्चात देश भक्ति का रंगारंग कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष सुभाष बैद द्वारा देशभक्ति गीत मीडिया प्रभारी सुरेश चोपड़ा द्वारा अमृत महोत्सव पर सबको बधाई देते हुए अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

महिला मंडल से भारती डागा, पिंकी जीरावला, भारती बरड़िया, जितेंद्र पारख, रजनी पारख ने तथा ज्ञानशाला से मोक्ष, महक चोपड़ा ने प्रस्तुति दी।

## फिट युवा-हिट युवा

**दिल्ली।**

तेयुप द्वारा अणुव्रत भवन में 'फिट युवा-हिट युवा' के अंतर्गत स्वास्थ्य का बूस्टर डोज कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुआ। कार्यशाला में प्रशिक्षक रमेश कांडपाल ने स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी एवं योग मुद्राओं से लाभान्वित करवाया।

कार्यशाला में अभातेयुप के प्रतिनिधिगण का स्वागत अध्यक्ष विकास सुराणा ने किया। कार्यक्रम में लगभग ६० की संख्या में युवाओं के साथ पदाधिकारीगण एवं गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन तेयुप के मंत्री अभिनंदन बैद ने किया एवं सहमंत्री विनय जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया।

## सम्यक् दर्शन कार्यशाला का आयोजन

**जोधपुर।**

अभातेयुप एवं समण संस्कृति संकाय के संयुक्त तत्त्वावधान में शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में सम्यक् दर्शन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

युगप्रधान श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जी की पुस्तक 'भगवान ने कहा' का प्रशिक्षण साध्वी सुमंगलाश्री जी ने दिया।

साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि आगम ज्ञान विशाल है, गंभीर है, वैज्ञानिक है, भगवान ने कहा पुस्तक ठाणं सूत्र पर आधारित है, कार्यशाला में अनेक भाई-बहनों ने भाग लिया। तेयुप अध्यक्ष मितेश जैन, मंत्री विनोद सुराणा एवं उनकी टीम का कार्यक्रम को सफल बनाने में सक्रिय सहयोग रहा।

## संस्कार निर्माण शिविर

**सरदारशहर।**

तेयुप द्वारा ज्ञानशाला के बच्चों के लिए द्विदिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में साध्वी सुमतिप्रभाजी का सान्निध्य रहा। साध्वी विशालप्रभा जी ने बच्चों को ज्ञानवर्धक बातें बताई एवं बच्चों को कहानी सुनाकर प्रेरित किया।

शिविर में बच्चों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। इन सबमें विजेता प्रतिभागी बच्चों को तेयुप द्वारा सम्मानित किया गया।

शिविर में ५० बच्चों ने भाग लिया। सभी बच्चों को सम्मानित किया गया। प्रशिक्षिकाओं एवं शिविर में उपस्थित बच्चों ने **अ सि आ उ सा** की कुल ४३५ माला का जाप किया।

## ध्वजारोहण कार्यक्रम

**भीलवाड़ा।**

आजादी के अमृत महोत्सव-स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा आचार्यश्री तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में ध्वजारोहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर पर तेयुप, महिला मंडल एवं अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी द्वारा राष्ट्र सम्मान में तिरंगा लहराया गया एवं राष्ट्रगान का संगान किया गया।

इस अवसर पर अभातेयुप के सदस्य कुलदीप मारू, अंकुर बोरदिया, तेयुप अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

## रक्तदान शिविर का आयोजन

**पूर्वांचल-कोलकाता।**

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा आयोजित इस सत्र के द्वितीय रक्तदान शिविर नेचुरल सिटी, श्यामनगर में आयोजित किया गया। जिसमें कुल ६६ यूनिट रक्त प्राप्त हुआ।

## तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा सेवा कार्य

**डोंबिवली।**

तेरापंथ किशोर मंडल, डोंबिवली द्वारा अंबिवली के वडवली गाँव और आदिवासी इलाकों में तिरंगा पहुँचाया गया। फिर खाना, कपड़े, कंबल आदि जरूरतमंद लोगों को वितरित किया गया।

किशोर मंडल, डोंबिवली प्रभारी निखिल डांगी, संकेत कच्छारा, राजेश बाफना, विकास परमार, चयन सियाल और किशोर मंडल संयोजक ऋषि गुंदेचा, सह-संयोजक कृष चंडालिया सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

## फिट युवा-हिट युवा के अंतर्गत कनेक्टिविटी कार्यक्रम

**चेन्नई।**

तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल ने फिट युवा-हिट युवा के अंतर्गत कनेक्टिविटी का कार्यक्रम मरीना बीच में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत सूर्योदय के पश्चात दौड़ से हुई। विभिन्न गतिविधियों द्वारा शारीरिक व्यायाम किशोरों द्वारा किए गए। कार्यक्रम के अंत में फिटनेस एक्सरसाइज हुआ। अनेक किशोरों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

तेयुप, चेन्नई मंत्री संदीप मूथा ने सहभागिता दर्ज की और किशोरों को प्रोत्साहित किया। किशोर मंडल प्रभारी मुकेश आच्छा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम के संयोजक किशोर मंडल कार्यसमिति सदस्य संकल्प नाहर, निखिल भटेवरा, यश चोरड़िया रहे।

## सेवा कार्य

**बैंगलोर।**

तेयुप, बैंगलोर द्वारा कुमारा पार्क स्थित मातृश्री मनोविकास केंद्र में मानसिक रूप से दिव्यांग बच्चों को अन्न-दान की सेवा दी गई। कार्यक्रम में अध्यक्ष संदीप चोपड़ा, निवर्तमान अध्यक्ष विनय बैद, विक्रम दुगड़, विवेक मरोठी सहित अनेक सदस्यगण उपस्थित थे।

# मासखमण तप अभिनंदन के कार्यक्रम

## इचलकरंजी

साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में महिला मंडल उपाध्यक्ष सपना बालड़ एवं इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सदस्य विकास सुराणा के मासखमण तप प्रत्याख्यान एवं अनुमोदना का कार्यक्रम तुलसी सभागार तेरापंथ भवन में परिसंपन्न हुआ।

तप अनुमोदना के कार्यक्रम में साध्वीश्री जी ने कहा कि तप का जिन शासन में बहुत अधिक महत्त्व माना गया है। जिनके क्षयोपशम प्रबल होता है, वे ही शक्ति का जागरण कर तप के क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं। बहन सपना व भाई विकास का क्षयोपशम प्रबल है और मनोबल भी उच्च है। दोनों ही विनीत, सेवाभावी, संघनिष्ठ, जागरूक श्रावक-श्राविका हैं।

सपना बालड़ के तप पर साध्वीप्रमुखाश्री जी के प्राप्त संदेश का वाचन रमेश बालड़, ने किया। सभा द्वारा संपूर्ण समाज की तरफ से दोनों तपस्वियों को अभिनंदन पत्र भेंट किया गया। तप अनुमोदना के क्रम में सभा अध्यक्ष महेंद्र गीड़िया, मंत्री पुष्पराज पगारिया, कन्या मंडल प्रज्ञा जोगड़ आदि ने वक्तव्य, कविता, गीत आदि द्वारा अभिनंदन किया। तेमम ने समुह गीतिका द्वारा अनुमोदना की।

साध्वीवृंद ने गीतिका द्वारा पतस्वी के भावों को बाध्य और प्रति मंगलकामना प्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी आस्थाश्री जी ने किया।

## कांदिवली (मुंबई)

सायन कोलीवाड़ा निवासी २२ वर्षीय मुस्कान धाकड़ ने कांदिवली तेरापंथ भवन में मासखमण-३१ दिन के तप का प्रत्याख्यान कर एक नए इतिहास का सृजन किया। इंजीनियर धाकड़ की यह तपस्या युवा पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा है। मैं इस विशिष्ट तप के लिए बहुत-बहुत साधुवाद देती हूँ। साध्वी निर्वाणश्री जी ने तप का प्रत्याख्यान करवाते हुए ये उद्गार व्यक्त किए।

साध्वीवृंद की ओर से गीतिका की प्रस्तुति हुई। रतन बाफना, पुष्पा बाफना, नवनीत कच्छारा सहित अनेकजन उपस्थित थे। स्थानीय सभा के पदाधिकारियों ने आचार्य तुलसी स्मृति ग्रंथ का उपहार देकर वर्धापना की।

तपस्विनी के पारिवारिकजन राकेश, रेखा एवं रजत ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। सूरत से समागत उपासक अर्जुन मेड़तवाल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

# चक्र घुमाओ भाग्य आजमाओ

**ठाणे।**

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी एवं साध्वीवृंद की प्रेरणा से 'चक्र घुमाओ भाग्य आजमाओ' रोचक प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसका आयोजन ठाणे की चारों युवक परिषद (सिटी, सेंट्रल, वागले स्टेट, कोपरी) ने संयुक्त रूप से किया।

प्रतियोगिता की पूरी तैयारी और स्वाध्याय के लिए ६० प्रश्नोत्तर दिए गए थे, जिसमें जोड़े से भाग लेने वाले प्रतियोगियों को प्रश्न का उत्तर देने के बाद चक्र घुमाकर उस पर अंकित अंक प्राप्त हो रहे थे, जो कि भाग्य पर आधारित था। प्रतिभागी १६ जोड़ों सहभागी बने।

प्रतियोगिता में सहभागी जोड़ों में से तीन भाग्यशाली विजेता जोड़े थे—प्रथम सरोज देवी-महेंद्र हिरण; द्वितीय प्रीति-कमलेश रांका; तृतीय लीना-अविनाश गोगड़। सभी सहभागी जोड़ों को भी पुरस्कृत किया। उपरांत कुछ प्रश्न दर्शकों से भी पूछे गए और उन्हें भी पुरस्कृत किया गया।

तेयुप, ठाणे सिटी अध्यक्ष अविनाश गोगड़ ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

# आजादी का अमृत महोत्सव का कार्यक्रम

**राउरकेला।**

राउरकेला में आजादी का अमृत महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। क्या युवा और क्या बच्चे सबका जोश देखते ही बन रहा था। सभा के अध्यक्ष छगनलाल जैन ने ध्वजारोहण किया और तिरंगा लहराने लगा। सभा के अध्यक्ष छगन जैन, महिला मंडल की अध्यक्षा सरोज गोलछा, तेयुप के अध्यक्ष हितेश बोथरा वक्तव्य दिया। सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष रूपचंद बोथरा, दिनेश जैन, मनीष कोठारी ने भारत की गौरव गाथा गाई। कनक बोथरा ने सभी को बधाई दी।

# साधु की आध्यात्मिक खुराक है आगम स्वाध्याय : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, २५ अगस्त, २०२२**

पर्युषण पर्व का दूसरा दिन—स्वाध्याय दिवस। महामनीषी, परम आराधक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आत्मवाद, कर्मवाद और लोकवाद आदि-आदि सिद्धांत जैन दर्शन में वर्णित है।

दस धर्मों का भी वर्णन आता है। हमारी सारी साधना, हमारे तीर्थंकर, तीर्थ ये किसी सिद्धांत पर आधारित है। जैन दर्शन का एक सिद्धांत आत्मवाद है। आत्मा अनंत, अनादि काल से है। आत्माएँ अंत को भी प्राप्त नहीं होगी। अनंत-अनंत जन्म-मरण हर आत्मा ने कर लिए।

जैन शासन में भगवान महावीर वर्तमान अवसर्पिणी के इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर के रूप में प्रतिष्ठित है। पर्युषण की इस आराधना में हम भगवान महावीर से भी जुड़ रहे हैं। अनेक जन्मों की यात्रा है। आत्मा हाथी में भी समाविष्ट हो जाती है और कुंथु में भी समाविष्ट हो सकती है। जैसी परिस्थिति है, उसके अनुसार अपने आपको ढाल लेना अच्छा होता है।

आत्मा फैलती है तो कभी पूरे लोक में फैल जाती है। अनंतकाय या निगोद के जीव किस प्रकार अनंत रूप में एक शरीर में रह जाते हैं। साथ में कैसे रहना ये शिक्षा निगोद के जीवों से ली जा सकती है। सबकी अलग-अलग आत्माएँ होती हैं। आदमी को सामंजस्य भी बिठाना होता है। जटिल प्रकृति वाले को भी साथ में रखना सामंजस्य हो जाता है। सहज करना अच्छी बात है। सब जगह प्रकृति को मत देखो, हमारे संघ की संस्कृति को देखो। विनय-अनुशासन को देखो। हम अपनी उदारता को बढ़ाने का प्रयास करें।

दीये के प्रसंग से समझाया कि आत्मा किस तरह फैल सकती है। जंबूद्वीप में महाविदेह क्षेत्र भी है। जहाँ तीर्थंकर हमेशा रहते हैं। भगवान महावीर के २७ भवों में प्रथम भव नयसार के प्रसंग को विस्तार से समझाया।

साधुओं को दान देने का मौका मिले, वो भी अच्छी बात है। नयसार को दान देने का अवसर मिला और संतों को मार्ग बताने का प्रयास किया। संतों ने भी उसको मोक्ष-धर्म का रास्ता बता दिया। नयसार ने भावपूर्ण वंदना की। उस जन्म में नयसार को सम्यक्त्व की प्राप्ति हो गई। संतों की सेवा करना सम्यक्त्व प्राप्ति का कारण बन सकती है। अनंत-काल की यात्रा में वो जन्म धन्य है, जिसमें सम्यक्त्व रत्न प्राप्त हो जाता है।

जैन दर्शन में सम्यक्त्व का बड़ा महत्त्व है। सम्यक्त्व की प्राप्ति हो और सम्यक्त्व निर्मल रहे। वह सत्य है जो जिनेश्वर भगवान ने प्रवेदित किया है। यथार्थ के प्रति श्रद्धा है, यह सम्यक्त्व है। जिनेश्वर भगवान कभी झूठ बात नहीं बोलते।

आज स्वाध्याय दिवस है। स्वाध्याय ज्ञान प्राप्ति का, जानने का एक सशक्त माध्यम बनता है। पढ़ना चितारना, कंठस्थ करना ज्ञान वृद्धि के उपाय हैं। परमपूज्य आचार्य तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने कितना ज्ञान अर्जित किया था। कंठस्थ ज्ञान के साथ उच्चारण शुद्ध हो। लेखन भी हमारा शुद्ध हो। बोलने में भी ध्यान दें। शुद्ध उच्चारण से ज्ञान अच्छा रह सकता है।

आगम स्वाध्याय बड़ा महत्त्वपूर्ण है। टीका-चूर्णि साथ हो तो स्वाध्याय में आसानी हो सकती है। जयाचार्य की जोड़ों का भी महत्त्व है। ज्यादा श्रम करना सार्थक हो सकता है। आगम स्वाध्याय साधु की एक खुराक है। आगमेत्तर ग्रंथों को भी पढ़ें। स्वाध्याय करते रहें और कराते रहें। संयम जीवन को पोषण देने वाला स्वाध्याय बन सकता है। अमृत सींचन संयम को मिल सकता है। कंठस्थ ज्ञान को सुरक्षित रखने का उपाय है—चितारना करो। हम स्वाध्याय की आराधना करते रहें।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि गौतम ने भगवान को पूछा कि जीव स्वाध्याय से क्या प्राप्त करता है। भगवान ने उत्तर दिया कि वह जीव ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय करता है। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय या क्षयोपशम करने के लिए स्वाध्याय करना चाहिए। ज्ञान को बढ़ाने के लिए बहुश्रुत साधु से जिज्ञासा भी करनी चाहिए।

मुख्य मुनि महावीर कुमारजी ने कहा कि सहनशीलता से सफलता मिलती है। समाज-परिवार में रहते हुए आदमी में प्रमोद भावना हो। व्यक्ति शांति के लिए अपने गुस्से को शांति से जीते। दस लक्षण धर्म को समझाया।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने कहा कि कपट भाव सभी गुणों का नाश कर देता है। धर्म मुक्ति का द्वार है। संतोषी आदमी हमेशा सुखी रहता है, यह संतों की वाणी है। अनासक्त जीवन जीने का आधार धर्म है।

मुनि राजकरण जी, मुनि ध्रुवकुमार जी, मुनि सत्यकुमार जी ने एवं साध्वी ज्ञातयशा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## शब्द रत्न मंजुषा को सुरक्षित...

(पृष्ठ १६ का शेष)

मरीचि बीमार पड़ता है, एक शिष्य भी बनाता है और उसका जीवन पूरा होता है। मरीचि के जीवन से यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि कोई किसी स्थिति को लेकर साधुपना न भी पाल सके तो भी पूरा गृहस्थ तो न बने। साधक का जीवन जीए, संयम का कुछ पालन करे।

नयसार की आत्मा के पंद्रह भव तक को संक्षेप में समझाया। सोलहवें भव में भगवान की आत्मा ने चारित्र ग्रहण किया पर निदान भी कर लिया कि अगले भव में मैं प्रबल बलशाली बनूँ। संयम-शील, चारित्र ग्रहण करने वाले को मोक्ष के सिवाय और कोई कामना नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने वाला करोड़ रुपये देकर एक कांकिणी को खरीदता है, पर कर्मों का योग है। प्रबल बल के लिए साधुपन बेच देना छोटी बात है।

अठारहवें भव में भगवान की आत्मा मनुष्य रूप में जन्म लेती है। पोतनपुरा नाम का नगर राजा प्रजापति। दो रानियाँ थी, दो पुत्र थे। नाम था राजकुमार अचल त्रिपृष्ठ। दोनों विद्याओं में पारंगत हो गए। पारंगत होने के लिए खपना पड़ता है। व्याकरण तो अलूणी शिला है, पर उसका ज्ञान महत्त्वपूर्ण है। स्वाध्याय में तो रस आ सकता है। संस्कृत भाषा में तो व्याकरण के ज्ञान बिना आदमी अंधा है। शब्दकोष नहीं होने पर वह बधिर है। साहित्य के बिना पंगु है। तार्किक शक्ति के बिना आदमी गूँगा है।

ज्ञान में तर्क भी होना चाहिए। तर्क विकास का साधन है। आज्ञा पालन में सतर्क रहो। ज्ञान में पारंगत बनने का प्रयास करें। राजा के दोनों पुत्र सहयोगी बन गए। अगली पीढ़ी तैयार हो जाए तो आदमी को अन्य कार्य करने का मौका मिल सकता है।

आज वाणी संयम दिवस है। वाणी हमारे जीवन व्यवहार का एक सक्षम साधन है। वाणी एक उपलब्धि है, लब्धि है। जैसे चाकू से ऑपरेशन भी किया जा सकता है और किसी की हत्या भी की जा सकती है। चलना कहाँ और कैसे वो खास बात है। इसी तरह हम वाणी का सदुपयोग भी कर सकते हैं और दुरुपयोग भी कर सकते हैं।

वाणी का जहाँ आवश्यक नहीं है, वहाँ अनावश्यक उपयोग न करें। हमारे शब्द भी रत्न हैं, इनका मौके-मौके पर उपयोग करें, अन्यथा होठ कपाट बंद रखें। परिमितभाषिता वाणी संयम का महत्त्वपूर्ण सूत्र है। मितभाषी बनें। दोष रहित भाषा बोलें। विचार कर बोलें। हर बात हर कहीं न बोलें। भाषा समिति के प्रति जागरूक रहे। दूसरे को कष्ट पहुँचे ऐसी बात न बोलें। बोलने में उदारता-विनय भाव है। मौन भी किया जा सकता है। शब्द रत्न मंजुषा को सुरक्षित रखने का प्रयास करें।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। बहनों में नवरंगी व भाईयों में पचरंगी चल रही है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि वाणी का अनावश्यक प्रयोग न करें। अहंकार की भाषा न बोलें, विनम्रता से बोलें। ओछे शब्द का भी प्रयोग न करें। शब्दों से व्यक्ति जाति का पता लग सकता है। हम सत्ययुक्त वाणी बोलें।

मुख्यमुनि महावीर कुमारजी ने कहा कि भाषा का विवेक रखना चाहिए। परीक्षा करके बोलो। पहले तोलो फिर बोलो। हितकारी और मितकारी वचन की साधना करनी चाहिए। हमारी भाषा मित्यायुक्त व कठोर न हो।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने कहा कि लाघव धर्म और सत्य धर्म। लाघव यानी हमें हल्का बनना है। आत्मा को हल्का बनाने के लिए हमें कषाय मंद करने होंगे। हम आत्मा को पापों से बचाने का प्रयास करें। सत्य आत्मशुद्धि का सुंदर पथ है।

मुनि मृदुलजी, मुनि नमन कुमार जी, मुनि सत्यकुमार जी ने प्रेरणादायक अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## दिव्य बोध युवा संस्कार संगठन कार्यशाला

**भुज।**

मुनि डॉ० पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में दिव्य बोध युवा संस्कार संगठन कार्यशाला का आयोजन तेयुप के तत्त्वावधान में किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि जीवन में संस्कारों का बहुत बड़ा महत्त्व है। दिव्यता का अनुभव प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक संस्कारों का आलंबन युवाओं के लिए विशेष आवश्यक है।

मुनि आदित्य कुमार जी ने युवाओं को चातुर्मास के दौरान अनेक कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता के लिए प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में अभातेयुप नरेश सोनी, सह-संयोजक दीपक समदड़िया एवं अपूर्व मोदी तथा सहयोगी अविनाश इंटोदिया, रवि डोशी आदि की उपस्थिति रही। स्वागत भाषण तेयुप अध्यक्ष आशीष बाबरिया ने तथा आभार ज्ञापन आदर्श संघवी ने किया।

✦ *बाल पीढ़ी को लौकिक विद्या के साथ अलौकिक विद्या (आध्यात्मिक विद्या) का भी शिक्षण और प्रशिक्षण मिलना चाहिए।*

**— आचार्यश्री महाश्रमण**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
5 - 11 सितंबर, 2022



✦ *जो भाग्य के भरोसे बैठ जाता है, उसे मैं अभागा कहना चाहूँगा। मेरा तो इस संदर्भ में यह भी सोचना है कि देववाद में भी ज्यादा नहीं जाना चाहिए।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**

## पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व का भव्य आध्यात्मिक शुभारंभ

# खाद्य संयम का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है – अनासक्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, २४ अगस्त, २०२२**

संपूर्ण जैन समाज का पावन पर्व जिसे महापर्व कहा जाता है—पर्युषण महापर्व का आज से शुभारंभ। नवाह्निक पर्व हमें अध्यात्म की प्रेरणा देने वाला पर्व है। तेरापंथ धर्मसंघ में इसे और विशेष रूप से मनाया जाता है। नौ दिनों के अपने-अपने दिवस स्थापित हैं। आज का दिवस है—खाद्य संयम दिवस।

तेरापंथ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि वर्ष के दो विभाग हो जाते हैं, एक चतुर्मास काल और दूसरा शेष काल। चतुर्मास काल धर्म आराधना की दृष्टि से कुछ विशेष स्थान रखता है। यूँ तो आदमी हर पल हर दिन धर्म-ध्यान कर सकता है। परंतु सामुहिकता की दृष्टि से और समयानुकुल्य की दृष्टि से चतुर्मास का समय धर्माराधना के लिए अधिक संगत और अनुकूल हो सकता है।

चतुर्मास के दौरान तपस्याएँ भी अपेक्षाकृत ज्यादा होती हैं। लंबी तपस्या भी करने वाले करते हैं। श्रावण-भाद्रव महीना जो चतुर्मास का पूर्वार्द्ध है, वो और ज्यादा धर्म-आराधना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इनमें भी भाद्रव मास तो हमारे जैन शासन में शिरमोर समय है। जहाँ पर्युषण पर्व का पदार्पण होता है। पर्युषण पर्व व दस लक्षण पर्व की आराधना होती है।

आज से पर्युषण पर्व का शुभारंभ हुआ है। जगह-जगह हमारे साधु-साध्वियाँ, समणियाँ उपासक आदि अपने ढंग से धर्माराधना करने में और कराने वालों में संलग्न हुए हैं। कम संपर्क में आने वाले भी इन दिनों में आकर प्रेरणा लें, धर्माराधना करें। ये आठ दिन का विशेष समय है। एक सुंदर आयोजन-व्यवस्था की गई है। पर्युषण

का कार्यक्रम भी सुव्यवस्थित और गरिमापूर्ण होता है। अध्यात्म से औत-प्रोत होते हैं।

इस अष्टाह्निक पर्व में श्रावक-श्राविकाओं का भी महत्त्वपूर्ण सहभाग होता है। पर्युषण में चारित्रात्माओं को विशेष लाभ संप्राप्त हो सकता है।

जैन शासन में आत्मवाद का सिद्धांत है। धर्माराधना-अध्यात्म आराधना का पुष्ट आधार है—आत्मवाद। आत्मवाद है, तो अध्यात्मवाद है। साधु-साध्वियाँ आत्मवाद के आधार पर ही दीक्षित हुए हैं। आत्मा त्रैकालिक और शाश्वत है। इस शाश्वतवाद ने आत्मवाद को टिका रखा है। आत्मवाद के सिंहासन पर अध्यात्मवाद का महाराजा विराजमान होता है।

श्रोता अच्छा दर्शक बन सकता है, तो वक्ता अच्छा दृश्य बन जाए। भाषण में वक्ता का भी अपना तरीका होता है। कैसे खड़ा रहे, कैसे बोले? वक्ता जितना सुव्यवस्थित रहता है तो श्रोता को अच्छा लाभ मिल सकता है। साधु-साध्वियों को अलग-अलग जगह जाकर बोलने का मौका मिल सकता है। बोलते-बोलते प्रखर वक्ता बन सकते हैं। प्रवचन देने का सुव्यवस्थित तरीका हो। समयबद्धता भी हो।

प्रवचन प्रारंभ में जल्दी या देरी न हो। समापन में देरी हो सकती है। परिस्थिति को देखकर वक्ता को अपना प्रवचन देना चाहिए। वक्तृत्व में आवाज भी अच्छी हो। कंठों की सुरक्षा का ध्यान रखें। वक्ता तैयारी के साथ बोले। आशुभाषण भी दे सकें यह वक्ता का अभ्यास होना चाहिए। श्रोता को भी सुनने का अभ्यास होना चाहिए। श्रोता वक्ता का प्रवचन नोट भी कर सके तो अच्छी सामग्री मिल सकती है। वक्ता को श्रोता ध्यान से सुनें।

वक्ता श्रोता बनने का भी प्रयास करें। ग्रहण करने का प्रयास हो।

आज पर्युषण पर्व का प्रथम दिन खाद्य संयम दिवस के रूप में स्थापित है। उपवास करना भी खाद्य संयम है। अनेक तपस्याएँ हो रही हैं। खाद्य संयम की प्रेरणा आगे भी साथ में रहे। भोजन करते-करते भी संयम रखा जा सकता है। प्रातराश व खाने के बाद दो-तीन घंटे का तिविहार-चौविहार त्याग किया जा सकता है।

भोजन करने के मूल दो उद्देश्य होते हैं—साधना—अनुकूल भोजन हो। स्वास्थ्यानुकूल भोजन हो। खूब खा लिया, सो गए तो फिर स्वाध्याय कितना होगा। खाने में बढ़िया लगे और अनुकूल क्या है, इसका ध्यान रखें। भोजन हितकर हो। खाने में भी जल्दबाजी न हो। चबा-चबाकर खाएँ, धीरे-धीरे खाएँ। भोजन और विसर्जन की क्रिया संतुलित रहे। पहले विसर्जन बाद में भोजन की प्रेरणा दी।

तंत्र हमारा ठीक रहे। मेरी साधना भी अच्छी रहे। ज्यादा रसों का प्रयोग न करें। विगय वर्जन भी बहुत बढ़िया है। आलोयणा भी उतर जाती है। गोचरी में भी ध्यान रखें। विवेक रहे, सुचारु हो।

खाद्य संयम का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है—अनासक्ति। बाल मुनि खूब फले-फूलें। मन में प्रसन्नता रहे। तपस्या भी हो। भोजन का लाभ उठाएँ, स्वाध्याय, सेवा करें। श्रावक-श्राविकाओं में भी तपस्या चले। तपस्या के प्रत्याख्यान करवाएँ।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि हम माला फेरें तो एकाग्रता से फेरें। मन का संयम करना चाहिए। मन के तीन कार्य हैं—स्मृति करना, चिंतन करना और कल्पना करना। विचारों के प्रवाह को रोका नहीं जा सकता। हमारी स्मृति कर्म निर्जरा का कारण बने, आनंद प्रदान करें। कल्पना भी वो करें जो हमें लक्ष्य तक ले जाए। खेचरीमुद्रा करें, जीभी को अंदर में रखें। इससे मन का संयम होगा, विचार कम होंगे और आनंद का अनुभव होगा।

मुमुक्षु बहनों ने गीत का संगान किया एवं साध्वी मुकुलयशाजी ने खाद्य संयम विषय पर गीत का संगान किया। मुनि राजकरण जी व मुनि सत्यकुमार जी ने भी खाद्य संयम के बारे में समझाया। मुनि राजकरण जी ने पुरुषों को पंचरंगी तप की प्रेरणा दी। मुनि हेमराज जी ने कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

# शब्द रत्न मंजुषा को सुरक्षित रखने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

**ताल छापर, २७ अगस्त, २०२२**

पर्युषण महापर्व का चौथा दिन—वाणी संयम दिवस। अर्हम् वाणी के व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवान महावीर के पूर्व भवों का विवेचन करते हुए फरमाया कि आदमी को पद, पैसा, प्रतिष्ठा, प्रशंसा आदि भौतिक उपलब्धियों के आधार पर घमंड नहीं करना चाहिए। ज्ञान का उपयोग किया जा सकता है, पर ज्ञान का भी घमंड नहीं करना चाहिए। पांडित्य है तो उसका प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। शक्ति होने पर भी क्षमा का भाव रखना चाहिए। दान और त्याग में श्लाघा-प्रशंसा की भावना नहीं होनी चाहिए।

मरीचि गर्व करता है कि मेरा कुल कितना उच्च है। मैं खुद प्रथम वासुदेव बनूँगा। मेरे पिता प्रथम चक्रवर्ती और मेरे दादा प्रथम तीर्थंकर बने हैं। मैं तो वासुदेव, चक्रवर्ती और अंतिम तीर्थंकर वर्तमान अवसर्पिणी काल का बनूँगा। घमंड आ गया। घमंड का सिर नीचा व कर्म का बंध कराने वाला होता है।

सेवा एक धर्म है। बीमार या सेवा अपेक्षा की सेवा करनी चाहिए। माता-पिता को धार्मिक सेवा का सहयोग देना चाहिए। उनके चित्त समाधि रखने का प्रयास करना चाहिए। अंतिम समय में त्याग-प्रत्याख्यान में कैसे सहयोगी बनें, प्रयास करना चाहिए।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

❑ अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स की प्रति डाक द्वारा निःशुल्क मँगवाने के लिए अपना नाम, पता, मोबाइल नंबर, ई-मेल आईडी इस नंबर 9480048066 पर व्हाट्सएप करें।
❑ तेरापंथ टाइम्स ऑनलाइन पढ़ने के लिए एवं पी0डी0एफ0 डाउनलोड करने के लिए www.terapanthtimes.com पर लॉगइन करें।
❑ तेरापंथ टाइम्स में संघीय समाचार प्रकाशन हेतु abtyptt@gmail.com पर मेल करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**